वर्ष : 49 • अंक : 15-16 • 1 से 31 अगस्त 2020 • मूल्य ₹ 8

Delhi Postal Regd. No. : G-3/DL(N)/144/2018-20
Licence No. U(DN) - 10/2018-20
Licenced to Post without Pre-payment

एक नज़र

(पंजाबी व मराठी में भी प्रकाशित)

सदस्यता दरें :	वार्षिक	तीन वर्ष	पाँच वर्ष	ग्यारह वर्ष
भारत/नेपाल	₹150	₹400	₹700	₹1500
यू.के.	£15	£40	£70	£150
यूरोप	€20	€55	€95	€200
अमेरिका	$25	$70	$120	$250
कनाडा/ऑस्ट्रेलिया	$30	$85	$140	$300

नोट : अन्य देश अमेरिकी डॉलर के बराबर राशि देंगे

R.N.I.No. 23853/72, Posted at NDPSO • Prescribed Dates : 3rd-4th, 16th-17th • Dates of Publication 1st & 15th • Pages : 08

29 अगस्त, स्मृति-दिवस पर विशेष

तप-त्याग और कर्तव्य-पालन की अनूठी मिसाल

निरंकारी राजमाता जी

निरंकारी राजमाता जी की 84 वर्षों की 'जीवन-यात्रा' किसी करिश्मे से कम नहीं। तप-त्याग एवं कर्तव्य-पालन की अनूठी मिसाल पेश करने वाली बुलन्द इरादों के साथ लक्ष्य की ओर अग्रसर रहने वाली कुलवंत कौर जी ने जीवन का एक-एक पल मानव-कल्याण में समर्पित किया।

निरंकारी राजमाता कुलवन्त कौर जी का जन्म अविभाजित भारत के जिला कैमलपुर (अब पाकिस्तान) में माता सोमावन्ती जी तथा पिता मन्ना सिंह जी के परिवार में 1 जनवरी 1931 को हुआ। धार्मिक प्रवृत्ति वाला परिवार होने के कारण भक्ति भाव एवं मर्यादा पालन के गुण आपको सहज में ही प्राप्त हो गये। आपके माता-पिता नियमित रूप से गुरुद्वारे जाया करते थे और पवित्र गुरवाणी का श्रवण और मनन करते थे। इन पारिवारिक संस्कारों ने आपके कोमल मन में अपनी जगह बनानी आरम्भ कर दी।

सत्य प्रचार में योगदान

सन्त निरंकारी मिशन की आध्यात्मिक ज्ञान गंगा का उद्गम करने वाले बाबा बूटा सिंह जी के समय में बाबू महादेव सिंह जी की प्रेरणा से आप सद्गुरु बाबा अवतार सिंह जी के चरणों में पहुँची और मात्र 8 वर्ष की आयु में आपको ब्रह्मज्ञान की दात प्राप्त हो गयी। गुरवाणी में रुचि रखने के कारण ज्ञान की समझ तुरंत आ गई। तभी से आप सेवा, सुमिरण, सत्संग में जुट गईं। आपकी प्रेरणा से ही आपके पिता एवं अन्य पारिवारिक सदस्यों ने ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति की। आप पूर्ण रूप से सद्गुरु बाबा अवतार सिंह जी की सेवा में समर्पित हो गईं। 22 अप्रैल 1947 को आपकी शादी शहंशाह बाबा अवतार सिंह जी के आदेशानुसार गुरबचन सिंह जी से कर दी गई, जो बाद में युगप्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी के नाम से जाने गये।

बाबा गुरबचन सिंह जी के साथ

देश विभाजन के बाद भारत आगमन हुआ और पहाड़गंज में शहंशाह जी एवं जगतमाता जी के साथ महापुरुषों की सेवा और सत्संग में समय व्यतीत होने लगा था।

बाबा अवतार सिंह जी का सान्निध्य आपको निरंतर प्राप्त होता रहा और 17 वर्ष तक युगप्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी, जिन्हें 1962 में सत्य के प्रचार की बागडोर सौंपी गई, के साथ प्रचार-प्रसार की मुहिम में साये की भाँति उनका साथ निभाया। सन् 1963 में जब शहंशाह बाबा अवतार सिंह जी ने आपको बाबा गुरबचन सिंह जी के साथ आसन पर बैठने का आदेश दिया तो संगतों ने आदेश सुनते ही दैवी खुशी का अनुभव किया क्योंकि माताजी का साथ बैठना नारी जाति का पूर्ण सम्मान था।

शहंशाह जी ने आपको 'राजमाता' का नाम देकर एक अभूतपूर्व दायित्व निभाया। धन्य वे संगतें थीं जिन्होंने अब भाभी अथवा बहन कहना बन्द करके आपको 'राजमाता जी' के नाम से सम्बोधित करना आरम्भ कर दिया। आपने जहाँ सत्य का संदेश जन-जन तक पहुँचाने में हर सम्भव योगदान दिया, वहीं अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को भी बखूबी निभाया।

सन्त निरंकारी सेवादल की स्थापना और विकास में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। आरम्भिक काल में आपने स्वयं वर्दी पहनकर सेवा करके एक मिसाल कायम की और अपने इकलौते सुपुत्र श्री हरदेव सिंह जी एवं अपनी सुपुत्रियों निरंजन जी, मोहिनी जी, जगजीत जी एवं बिन्दिया जी को भी सेवादल की वर्दी पहनकर सेवा करने की प्रेरणा दी। इस तरह आपने महिला सेवादल को बढ़ाने में अहम् योगदान दिया।

सत्य की आवाज को विश्व भर में फैलाने का जो बीड़ा बाबा अवतार सिंह जी ने उठाया था उसे आगे बढ़ाने में आपने उल्लेखनीय योगदान दिया। आपने न केवल भारत के दूर-दराज के दुर्गम क्षेत्रों में जाकर संगतों को आशीर्वाद प्रदान किया बल्कि विश्व के अनेक देशों की मानव कल्याण यात्राओं में अनवरत योगदान दिया। सन् 1967 में पहली बार बाबा गुरबचन सिंह जी के साथ दूर-देशों की यात्रा की, फिर यह सिलसिला 1978 तक ऐसे ही चलता रहा। वर्ष 1978 में जब मिशन को कुछ विपरीत परिस्थितियों से गुजरना पड़ा, उस समय भी आपने अत्यंत धैर्य और साहस तथा नीति को आधार बना कर जहाँ सद्गुरु बाबा गुरबचन सिंह जी का पूर्ण साथ दिया, वहाँ संगतों को धीरज, सहनशीलता तथा सद्भाव बनाए रखने की शिक्षा दी। यहाँ तक कि वर्ष 1980 में आपके पति और मिशन के संरक्षक, युगप्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी के बलिदान के उपरांत भी संगतों को संयम में रहने तथा शान्तिपूर्वक सत्य के पैगाम को जन-जन तक पहुँचाने में जुटे रहने की प्रेरणा आपके कर्म एवं आचरण द्वारा ही प्राप्त हुई। आपने किसी भी परिस्थिति में कोई विपरीत कदम न उठाने की प्रेरणा प्रदान की। सत्य-धर्म प्रचार के प्रति आपकी आस्था एवं कर्म से प्रेरित होकर विश्व धर्म संसद की ओर से आपको 'धर्म रत्न' की उपाधि से विभूषित किया गया।

दूर-देशों की कल्याण-यात्रा में राजमाता जी

सन् 1980 में जब बाबा हरदेव सिंह जी सद्गुरु रूप में प्रकट हुए तो आपने अदम्य साहस का परिचय देते हुए धैर्य और संयम का पाठ पढ़ाने का बीड़ा उठाया तथा 34 वर्ष तक अधिकांश कल्याण यात्राओं में साथ दिया। माँ के रूप में बाबा हरदेव सिंह जी को ऐसी शख्सियत मिली जिन्होंने बालपन की अवस्था से कदम-कदम पर गुरमत की शिक्षा एवं श्रेष्ठ संस्कार प्रदान किये।

आपने सद्गुरु बाबा जी के साथ यू.के., डेनमार्क, जर्मनी और ऑस्ट्रिया की यात्रा की। सन् 1981, 1984 तथा 1985 में भी आप बाबा हरदेव सिंह जी के साथ विश्व कल्याण यात्राओं में सहभागी बनीं। सन् 1986 से 2012 के दौरान पूज्य राजमाता जी ने प्रचार की रफ्तार को बढ़ाने के लिए स्वयं भी विश्व के अनेक देशों की यात्राएं कीं तथा सत्य-प्रेम और शान्ति-सद्भाव का संदेश प्रसारित किया। इन यात्राओं में मुख्य रूप से ईरान, यू.के., अमेरिका, कनाडा, थाईलैण्ड, मलेशिया, सिंगापुर, हॉलैण्ड, फिलीपीन्स, हांगकांग, जापान, स्वीडन, स्पेन, फ्रांस, इटली, यू.ए.ई., कुवैत, मस्कट, बहरीन, डेनमार्क, स्विटजरलैण्ड, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड आदि देश सम्मिलित रहे। 84 वर्ष की आयु में भी निरंकारी राजमाता जी का सत्संग के प्रति उत्साह यथावत था। राजमाता जी आत्म उत्थान तथा समाज सुधार के प्रति हमेशा जागरूकता प्रदान करती रहीं।

भारत के 60वें स्वतंत्रता दिवस पर 2007 में 15 अगस्त को बर्मिंघम (यू.के.) में निरंकारी राजमाता जी ने तिरंगा झण्डा फहरा कर इस दिन को ऐतिहासिक बना दिया। बालाजी मंदिर के हॉल में इस अवसर पर भव्य समारोह आयोजित किया गया जिसमें भारत सरकार के प्रतिनिधि कौंसिलर जनरल श्री एन. के. शर्मा, मंदिर के प्रधान डॉ. नारायणन्, ब्रिटिश आर्मी के जवान, रायल एयर फोर्स, ब्रिटिश पुलिस, ब्रिटिश सरकार के मंत्री, मेयर, कई मंदिरों, गुरुद्वारों, चर्चों के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। झण्डे को सलामी दी गई और दोनों देशों के राष्ट्रीय गीत गाये गये।

समाज के प्रत्येक वर्ग, विशेषकर सेवादारों के जीवन को सुखद एवं खुशहाल बनाने के लिए आप निरन्तर उनके पारिवारिक कार्यक्रमों-शादी, जन्म दिन, गृह प्रवेश आदि के अवसर पर उनके साथ सम्मिलित हो जाती थीं तथा आवश्यकतानुसार उनकी हर प्रकार की सहर्ष सहायता करती थीं। अनेक जरूरतमंद परिवारों के बच्चों की शादियाँ आपने स्वयं करवाईं। अनेक परिवारों के गृहस्थ जीवन में आने वाली कठिनाईयों का आप सहज ही समाधान कर दिया करती थीं। आप सदैव सद्गुरु से सभी के लिए सुखों की अरदास करती थीं। किसी सेवादार द्वारा हुई गलती पर आप पर्दा डालती थीं, लेकिन फिर से गलती न करने की शिक्षा भी प्रदान करती थीं। कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करना आपके स्वभाव में रहा। माँ की ममता से भरा तप-त्याग युक्त आपका जीवन गुरुभक्ति और उदारता से परिपूर्ण था। हृदय की विशालता, सहनशीलता और सब्र-संतोष जैसे गुणों से सुशोभित राजमाता जी अत्यन्त सम्मानित और सर्वप्रिय थीं।

बाबा हरदेव सिंह जी के साथ

सन् 1963 से लेकर 2013 तक वार्षिक निरंकारी सन्त समागमों में आप सद्गुरु के साथ बैठकर संगतों को गुरमत और जीवन जीने की कला सिखाती रहीं। इस तरह आपने 51 वर्ष सद्गुरु के साथ समागमों की अध्यक्षता की, संगतों ने भी आपको हृदय से स्वीकार किया। उन्हें सद्गुरु बाबा जी व पूज्य माता जी के साथ बैठने के कारण ''त्रिवेणी'' के नाम से अभिहित होने का गौरव भी प्राप्त हुआ।

शारीरिक अस्वस्थता के बावजूद आप निरंतर सत्संग कार्यक्रमों एवं प्रचार यात्राओं में सम्मिलित होकर श्रद्धालुओं को आशीर्वाद तथा प्रेरणा देती रहीं। इसी शारीरिक अस्वस्थता के चलते 29 अगस्त 2014 को आप नश्वर शरीर को त्यागकर निरंकार-प्रभु में लीन हो गईं।

('माँ तुझे सलाम' पुस्तक से ...)

यू.के. में स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण करते हुए निरंकारी राजमाता जी

मुक्ति-पर्व पर तपस्वी सन्तों को नमन्

निरंकारी जगत में 'मुक्ति-पर्व' पर युगपुरुष बाबा अवतार सिंह जी एवं जगतमाता बुद्धवंती जी सहित उन तमाम हजारों महात्माओं को याद किया जाता है जिन्होंने जीवन भर सत्य के प्रचार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके तप-त्याग से भरपूर जीवन से वर्तमान पीढ़ी को प्रेरणा प्राप्त होती है। उन महात्माओं ने कठिन परिस्थितियों के दौर से गुजरते हुए सत्य-ज्ञान के प्रचार में शिथिलता नहीं आने दी और इस आवाज को जन-साधारण तक पहुंचाने में अपना एक-एक पल लगाया। मुक्ति-पर्व पर हम ऐसे ही कुछ तपस्वी महात्माओं को याद कर रहे हैं जिन्होंने सद्गुरु के आदेशानुसार प्रचार में योगदान दिया। ❐ सम्पादक

श्री लाभ सिंह जी

सन्त निरंकारी मण्डल के प्रथम प्रधान होने का सौभाग्य भी उन्हें प्राप्त हुआ, किन्तु उच्च–पद को प्राप्त करके भी अहंकार उन्हें छू नहीं पाया। वे चाहते तो अनेकों प्रकार के बहाने बनाकर दिल्ली में ही बने रहते और कार्यालय सम्बन्धी कार्यों को देखने के बहाने अपना जीवन आराम से व्यतीत करते, परन्तु उनके हृदय में परोपकार कूट–कूट कर भरा था, यही कारण है कि अपनी अधिक आयु होने के बावजूद भी वे उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल एवं देश के अन्य सुदूर प्रदेशों में सत्य की आवाज को फैलाते रहे।

डॉ. देसराज जी

आपका समर्पण भाव ऐसा प्रबल था कि सद्गुरु बाबा जी ने जो भी कार्य सौंपा उसे करने में आपने रत्ती भर भी संकोच नहीं किया। चरणामृत पर आपकी आस्था इतनी प्रबल थी कि हर एक को उसकी महिमा, अनेकों प्रमाण देकर समझाते थे। चरणामृत बनाने की शुरूआत भी इन्होंने ही की। उनका कहना था कि यह सब रोगों की अमोघ औषधि है। आप जहां स्वयं गुरु भक्ति के रंग में रंगे थे वहीं पूरे परिवार को भी इन्होंने इसी रंग में रंग दिया।

बाऊ महादेव सिंह जी

इस महान विभूति की महानता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि निरंकारी मिशन के चारों गुरुओं से आपका सम्पर्क रहा। तीन गुरुओं से आपके पारिवारिक सम्बन्ध भी थे परन्तु आपने कभी स्वयं इसकी चर्चा नहीं की।

श्री राम सरन जी

सैकेट्री का सम्बन्ध हर नवागंतुक से एवं प्रतिदिन के प्रशासनिक कार्यों के करने वालों से पड़ता ही रहता था, परन्तु आपकी मधुर आवाज, सौम्य एवं नम्र स्वभाव आपके इस पद के उत्तरदायित्व को निभाने में बहुत सहायक थे। सद्गुरु की आज्ञा पालन करने में आप ही के साथ कंधे से कंधा मिलाये चल रही थीं, बहन शान्ति जी आपकी धर्मपत्नी।

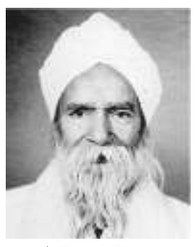

श्री सन्तोख सिंह जी

भक्त के निष्काम सेवा भाव व तप–त्याग को देखते हुए बाबा अवतार सिंह जी ने सरोवर परिसर में सन्त समागम आयोजित करने का आदेश दिया। जिसे बाद में 'भक्ति–पर्व' समागम के रूप में आयोजित किया जाने लगा। प्रथम माघी सन्त समागम के अवसर पर बाबा अवतार सिंह जी ने इस स्थान का नामकरण भी 'संतोख सरोवर' के रूप में कर दिया जो अब निरंकारी सरोवर के नाम से जाना जाता है। सन् 1948 में सन्त निरंकारी मण्डल की स्थापना होने पर युगपुरुष बाबा अवतार सिंह जी द्वारा आपको प्रकाशन व प्रचार से सम्बन्धित कार्य सौंपा गया। सद्गुरुदेव के हर तरह से आशीष पाने के बावजूद अहंकार आपको स्पर्श भी न कर सका। अपने तपी जीवन में आपने गुरु भक्ति के शिखर को छुआ।

श्री जुगल किशोर जी

आपका जीवन बहुत ही सादा और नियमबद्ध था। बातचीत में भी आप पूरी तरह स्पष्ट थे और मुँह पर कह देते थे। आप कहा करते थे कि ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति तो कठिन नहीं लेकिन इसकी संभाल कठिन है। उनका कहना था कि ब्रह्मज्ञानी की आत्मा तो अवश्य ही ब्रह्म में लीन हो जाएगी परन्तु वह सद्गुरु के बताए मार्ग पर न चला तो जीवन मुक्ति का आनन्द प्राप्त नहीं कर सकता।

भगत रामचंद जी (दिल्ली)

भगत राम चंद जी (पहाड़गंज, दिल्ली) उन संत–महापुरुषों में से थे जिन्होंने भक्ति भरा जीवन जीकर भक्ति की प्रेरणा दी। आपने केवल स्वयं ही भक्ति नहीं की बल्कि अपने कर्म से अनेक लोगों को भी भक्त बनाया। आपके सम्पर्क में जो–जो भी आया उसे आपने एक पावन–पवित्र गुरसिख बनने में अपना पूर्ण योगदान दिया।

श्री अमर सिंह जी

कभी आप साइकिल पर जाकर प्रचार करते और कभी किसी महापुरुष की साइकिल के पीछे बैठकर भी आस–पास के क्षेत्र में प्रेम और शान्ति के प्रचार को फैलाने का प्रयास करते। एक बार बाबा अवतार सिंह जी प्रचार करते हुए पटियाला पधारे। उस समय सन्त निरंकारी मण्डल का भवन वहाँ पर नहीं था। इस सत्संग का कार्यक्रम भाई साहब अमर सिंह जी के घर पर ही किया गया। आपके मृदु स्वभाव से वह लोग भी आपके आगे नतमस्तक हो जाते थे जो मिशन के विरोध में रहते थे।

चाचा प्रताप सिंह जी

निष्काम सेवा आपके जीवन का अभिन्न अंग था। वह सेवा को ही शान्ति पाने का साधन मानते थे। इसलिए प्रत्येक को सेवा की प्रेरणा देते थे। निरंकारी कालोनी जाने के लिए उन दिनों कोई सवारी नहीं मिलती थी। आपने एक रिक्शा बनवा लिया और महापुरुषों को लाने ले–जाने की सेवा करने लगे। मन में यही एक भाव था कि किसी भी प्रकार से लोग सुखी हों, उनको शान्ति प्राप्त हो। बीमार व्यक्तियों को अस्पताल ले जाना, उन्हें उचित सुविधाएं दिलाना और उनके खाने–पीने का उचित प्रबन्ध करना उनकी सेवा के विशेष अंग थे। सद्गुरु के आशीर्वाद से सन्त निरंकारी सेवादल का गठन निरंकारी जगत को अनूठी देन रही।

श्री मोती राम सर्राफ जी

इनके एक पुराने परिचित श्री मस्ताना जी इन्हें निरंकारी बाबा अवतार सिंह जी के पास ले आये। युगपुरुष बाबा अवतार सिंह जी ने इन्हें ब्रह्म का ज्ञान देकर इनकी वर्षों की भटकन को समाप्त कर दिया। ईश्वर का साक्षात्कार करके आपका जीवन सफल हो गया। आप संसार और परमार्थ दोनों सुखों से मालामाल हो गये। तब से उन्होंने अपना पूरा जीवन सन्त निरंकारी मिशन को समर्पित कर दिया।

भापा रामचंद जी (कपूरथला)

आप जहां पर भी जाते अमन–एकता का संदेश लेकर जाते। लोगों के हृदय में शान्ति की धारा प्रवाहित कर देते। आप दिखावे के बहुत खिलाफ थे। आप सदैव ही अधिक से अधिक शान्ति फैलाने में अपना समय लगाना चाहते थे। आपने अपना रहन–सहन इतना सादा रखा हुआ था कि कई दिनों की प्रचार यात्रा में भी आपका सामान केवल एक झोला होता था। एक सलवार, कमीज और पगड़ी पहन ली और एक झोले में डाल ली, बस हो गयी तैयारी।

श्री निहाल सिंह जी

सद्गुरु की एक मेहर भरी नजर जब इंसान पर पड़ जाती है तो उसका काया–कल्प हो जाता है। युगपुरुष बाबा अवतार सिंह जी जब दिल्ली आये तो पहाड़गंज में रहकर विभाजन की विभीषिका झेल रहे महापुरुषों को सत्संग के साथ–साथ जीवन यापन हेतु नई दिशा देने लगे। उसी प्रारम्भिक दौर में उन्होंने युवा निहाल सिंह जी के ऊपर भी अपनी विशेष कृपा बरसाई और अपनी कल्याण यात्राओं में गीतकार के रूप में साथ ले जाने लगे।

भगत कोटूमल जी

पूरे परिवार को निराकार का बोध कराया और हमेशा संगत के साथ, गुरमत के साथ जोड़े रखा। गुरु की सिखलाई के ऊपर जीवन–पर्यन्त हमें उंगली पकड़कर चलना सिखाते रहे। जीवन की छोटी–छोटी बातें और बड़ी से बड़ी मुश्किलों में गुरु के चरणों के साथ जोड़कर रखा। न जाने कितनी छोटी–छोटी बातों में हम अनजाने में गलतियाँ कर जाते हैं और वो हमें हंसकर इतनी आसानी से सिखा गये। आज जब हम उन बातों को याद करते हैं तो रोम–रोम उनका आभारी हो उठता है।

श्री 'निर्मल' जोशी जी

जहाँ वे सुलझे हुए साहित्यकार थे वहीं वे प्रखर वक्ता भी थे। वक्ता के रूप में उनकी सबसे बड़ी खूबी यह थी कि चाहे किसी भी स्तर का श्रोता वर्ग हो, वे उसे अपने साथ कुशलतापूर्वक जोड़ लेते थे। दूसरे शब्दों में कहें तो वे जनमानस के प्रिय वक्ता थे। जो सोचते थे उसे कहने में कोई संकोच अनुभव नहीं करते थे। उनकी यह प्रवृत्ति श्रोताओं को विशेष प्रभावित करती थी।

ऋषि व्यास देव जी

दिल की गहराई से हर व्यक्ति से सम्बन्ध बना लेना उनकी व्यवहारिक कुशलता थी। यही कारण है कि उ.प्र. से लेकर महाराष्ट्र तक, पंजाब से लेकर बिहार तक ही नहीं बल्कि इस शान्ति की धारा को उन्होंने नेपाल में भी प्रवाहित किया। दो देशों की सीमाओं के बाहर नेपाल में जहां किसी दूसरी विचारधारा को फैलाने की मनाही थी और इसी आरोप में वहाँ उन्हें गिरफ्तार भी किया गया। ऋषि व्यासदेव जी का व्यक्तित्व भी एक ऋषि जैसा था। आपके निश्छल, तपस्वी जीवन को देखते हुए ही शहंशाह जी ने आपको 'ऋषि' का खिताब दिया था।

श्री रूपलाल जी

संत रूपलाल जी के प्रेरणादायी प्रवचनों का जनमानस पर गहरा प्रभाव पड़ा। फलस्वरूप भारत के कोने–कोने से आपको भेजने की गुजारिश की जाने लगी। जीवन में आई विपरीत परिस्थितियों का सामना भी आपने शान्त स्वभाव से किया और सत्य के प्रचार में जुटे रहे। आपने देश में स्थान–स्थान पर जाकर सत्य और शान्ति का प्रचार कर लोगों के दिलों को ठण्डक प्रदान की और 'कोल्ड स्टोर' के नाम से विख्यात हुए।

श्री गोपाल सिंह 'प्रेमी' जी

प्रेमी जी ने जहाँ सद्गुरु से भरपूर आशीर्वाद प्राप्त किया वहीं मिशन तथा साध संगत की सेवा भी तन–मन–धन से की। शहंशाह बाबा अवतार सिंह जी ने सन् 1956 में जब सेवादल का गठन किया तो प्रेमी जी को उप–मुख्य संचालक की जिम्मेदारी दी जिसे उन्होंने पूरी तन्मयता से निभाया। बाद में 1993 में बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने उनकी सेवाओं को देखते हुए उन्हें सेवादल का मुख्य संचालक बनाया।

श्री गुरदयाल सिंह सिद्धू जी

सद्गुरु से सर्वव्यापक निराकार–प्रभु का ज्ञान प्राप्त करके आप सदा–सदा के लिए गुरु–चरणों में न्यौछावर हो गये। आरम्भ से ही आप एक खामोश कार्यकर्त्ता के रूप में निरंकारी मिशन से जुड़े और अंत तक इसी प्रकार जुड़े रहे। आप एक प्रतिभा सम्पन्न प्रशासक तथा कर्मठ कार्यकर्त्ता होने के साथ–साथ एक विनम्र एक विश्वासी गुरुभक्त भी थे इसलिए आपने कभी स्वयं आगे बढ़कर अपनी सेवाओं या योग्यताओं की किसी से चर्चा नहीं की।

श्री सूरज मोहन जी

श्री सूरज मोहन जी न केवल समर्पित भक्त थे, बल्कि एक प्रभावशाली प्रचारक भी थे। उन्होंने मिशन के सत्य–प्रेम के संदेश को जनसाधारण तक पहुंचाने के लिए बहुमूल्य योगदान दिया। मृदुल स्वभाव एवं परहित के भाव से कार्य करने वाले श्री सूरज मोहन जी के जीवन की यह विशेषता थी कि वह जब भी किसी से ज्ञान चर्चा या वार्तालाप करते तो उनके मृदु व्यवहार में सहजता स्पष्ट झलकती थी।

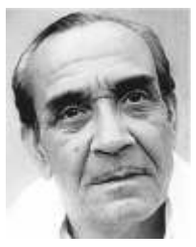

श्री पूर्ण प्रकाश 'साकी' जी

श्री साकी जी 9 नवम्बर 1991 को नश्वर शरीर त्यागकर ब्रह्मलीन हो गये। उनके श्रद्धाँजलि समारोह में सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने कहा 'अपनी प्रभावशाली आवाज से संगतों को निहाल करते रहे परन्तु वाहवाही को सदैव दातार को समर्पित करते रहे। उनके ख्याल हर जुबान पर हैं और रहेंगे। दातार के साथ उन्होंने अन्तिम श्वासों तक प्रीत निभाई।'

श्री मनमोहन सिंह जी

आपने सद्गुरु की आज्ञा का पालन किया। रहस्य का पता तब चला जब उन्हें सेना द्वारा एक तार मिला, जिसमें यह आदेश था कि आप अपना अवकाश बीच में छोड़कर तुरंत अपनी बिग्रेड में पहुंचें तो उन्हें चेमल जौसी जाने का हुक्म हुआ, जहां दुश्मनों द्वारा एक ब्रिगेडियर को मार दिया गया था। उन्होंने एक सेनापति की तरह अपनी सेना को संभाला।

श्री लालचंद जी

आपको पहाड़गंज के संत निरंकारी सत्संग भवन की सेवा प्रदान की गई। केन्द्रीय श्रम मंत्रालय में सैक्शन ऑफिसर के पद से आप अक्टूबर 1990 में सेवानिवृत्त हो गये और सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के आशीर्वाद से आपको 1991 में पहाड़गंज क्षेत्र के प्रमुख का दायित्व सौंपा गया। कुछ वर्षों तक आपने सन्त निरंकारी 'सिन्धी' पत्रिका में अनुवादक के रूप में सेवा भी की। सद्गुरु के अनन्य भक्त, सेवा और समर्पण की मिसाल थे श्री लालचंद जी।

श्री अजायब सिंह जी

आपकी लगन देखकर आपको सेवादल के इंचार्ज की सेवा सौंपी गई। आपको संगतों के कार्यक्रमों, गीत–संगीत और प्रबन्ध के विषय में योजनाएं बनाने का बहुत शौक था। जरूरत पड़ने पर निरंकारी सरोवर को सुन्दर स्वरूप प्रदान करने की जब योजना बनी तो सद्गुरुदेव जी की दृष्टि इस महात्मा की ओर गई। सभी सम्बन्धित सेवादारों का सहयोग प्राप्त करके बहुत कम समय में आपने सरोवर का कायाकल्प कर दिखाया।

ज्ञानी जोगिन्दर सिंह जी

ज्ञानी जी को ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति शहंशाह बाबा अवतार सिंह जी द्वारा 1962 में हुई। ज्ञानी जी ने भारत और विदेशों में निःस्वार्थ समर्पित भाव से सेवा की। लंदन भवन पर उनकी 14 साल की सेवा ने विशेषकर युवाओं को मोहित किया। वे प्रतिष्ठित प्रचारकों में से एक थे। उनकी विचारों की स्पष्टता और आध्यात्मिक विषयों का गहन ज्ञान अद्वितीय था। परन्तु इन सबसे अधिक उनकी विनम्रता सराहनीय है जिससे उन्होंने ज्ञान को अपने जीवन में उतारा।

श्री हरदेव सिंह 'अलमस्त' जी

अलमस्त जी एक प्रभावशाली लेखक और परिपक्व कवि थे। अलमस्त आपका उपनाम था। रोजमर्रा की साधारण–सी लगने वाली घटनाओं को प्रतीक रूप में प्रयोग करके गहन से गहन विषय को सादे से शब्दों में कह पाने में आप सिद्धहस्त थे। आपके अनेकों शेअर मुहावरों के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं।

श्री के.सी. राही जी

भक्त, निःस्वार्थ भाव से सब कुछ करते हुए शान्त और संतोषी जीवन गुजारते हैं। परिवार और समाज की जिम्मेदारियों को अपना कर्तव्य समझ कर निभाते हैं इसलिए उनके मन में कुछ पाने की इच्छा नहीं होती। अपने कर्तव्य व कर्मों को ईश्वरीय इच्छा का साधन मानते हैं। ऐसे ही एक महान व्यक्ति थे श्री किशन चन्द राही जो निरंकारी जगत में केवल 'राही' जी के नाम से जाने जाते थे।

श्री जी.एस. 'राजकवि' जी

परिवार व समाज की जिम्मेदारियों को निभाने के साथ–साथ, सत्य–प्रचार में कर्मयोगी व्यक्तित्व के रूप में योगदान दिया। लगन, उत्साह व स्पष्टवादिता उनके जीवन की विशेषता थी। राजकवि जी ने बाबा बूटा सिंह जी से अमोलक दात पाई और यौवनावस्था से ही सत्य के संदेश को जन–जन तक पहुंचाने की लगन लग गई।

श्री डी.एस. 'शौक' जी

सद्गुण, परमात्मा की विशेष देन होते हैं। काव्य–गुण, सत्यवादिता, लेखन कला, मर्यादा पालन यह सब यदि कोई व्यक्ति चाहे तो अपने प्रयत्नों से प्राप्त नहीं कर सकता, ऐसे ही गुणों से युक्त थे श्री धर्मसिंह जी, जो 'शौक' साहब के नाम से विख्यात थे। 1950 में आपको बाबा अवतार सिंह जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। उनकी प्रेरणा से आप शान्ति प्रचार के कार्य में जुट गये। जो भी आपके सम्पर्क में आया वही आपके प्यार व नम्र स्वभाव का कायल होकर रह गया।

श्री जे.आर.डी. 'सत्यार्थी' जी

आप मिशन के प्रख्यात चिंतक, विचारक एवं अनुभवी वक्ता के रूप में लोकप्रिय हुए। बाबा गुरबचन सिंह जी एवं बाबा हरदेव सिंह जी के साथ देश–विदेश की अनेक कल्याण–यात्राओं में साथ रहकर कुशल प्रचारक के रूप में उभर कर आये। मिशनरी साहित्य एवं पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन में भी आपका उल्लेखनीय योगदान रहा। सभी के प्रति विनम्रता एवं प्यार उनके व्यक्तित्व का अनूठा अंग था।

श्री मंगल सैन जी

सहज और सरल व्यवहार के धनी होने के साथ ही आपके जीवन में 'सादा जीवन उच्च विचार' की उक्ति चरितार्थ रही। सद्गुरु के प्रति समर्पण आपकी अनन्य भक्ति की मिसाल रही। जो भी जिम्मेदारी दी गई, उसे पूरी कर्तव्यनिष्ठा के साथ निभाया।

श्री देवराज बजाज जी

आप कर्मठ प्रचारक, प्रेमा भक्ति एवं सेवा के जीवन्त उदाहरण थे। बचपन से ही अध्यात्म की ओर झुकाव होने के कारण धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन किया करते थे। सद्गुरु के प्रति समर्पण आपके व्यक्तित्व की विशेषता थी।

श्री मान सिंह 'मान' जी

सद्गुरु के प्रति विश्वास और गुरमत से परिपूर्ण कविताओं द्वारा आप 'निरंकारी गालिब' के रूप में विख्यात हुए। मिशन की पत्र–पत्रिकाओं के सम्पादन के साथ ही 'मान' जी ने अनेक पुस्तकें भी लिखीं। उनका आत्म विश्वास इतना मजबूत था कि मृत्यु से भी भय नहीं, बल्कि एक चुनौती देते हुए कविता में लिखते हैं –

इक दिन मैं वी मर जावांगा, सब कुछ पहलां कर जावांगा।
मौत जां मेरे दर आयेगी, तां मैं उसदे घर जावांगा।

"वसुधैव कुटुम्बकम की भावना की पुनर्स्थापना के लिए आवश्यक है कि दुनिया का हर इन्सान खान–पान, रहन–सहन, रंग–नस्ल आदि की विभिन्नताओं को सहज रूप में स्वीकार करते हुए दया, करुणा, प्रेम और विशालता जैसे मानवीय गुणों से युक्त हो ताकि हर इन्सान के जीवन में आनन्द और सुख–शान्ति आए।"

– माता सविन्दर हरदेव जी महाराज

दिव्य-विभूति की पावन स्मृति

ममता की मूर्ति

माता सविन्दर जी

'अनेकता में एकता' का सूत्र प्रदान करने एवं सम्पूर्ण धरा पर बसने वाले इन्सानों के लिए सुख–समृद्धि, आनन्द की स्थापना के लिए प्रयासरत रहीं। माता सविन्दर हरदेव जी महाराज 17 मई 2016 को सद्गुरु रूप में प्रकट हुईं।

अपनी अलौकिक दिव्य–वाणी से मानव–मात्र को अपने पहले ही सम्बोधन में यह भाव प्रकट करके कि 'कुछ भी हो केवल प्यार ही प्यार हो' सिद्ध कर दिया कि युगदृष्टा बाबा हरदेव सिंह जी ने जीवन भर सत्य–प्रेम, शान्ति– सद्भाव, परस्पर मधुर सम्बन्ध, विश्व–भ्रातृभाव का जो सन्देश दिया था, यह सद्गुरु भी उसी कल्याणकारी सन्देश को जन–जन तक पहुँचाने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ रहेगा।

माता सविन्दर जी का जन्म 12 जनवरी 1957 को यमुनानगर निवासी श्री मनमोहन सिंह जी एवं श्रीमती अमृत कौर जी के परिवार में हुआ। आपका लालन–पालन फर्रुखाबाद निवासी श्री गुरमख सिंह आनन्द जी और श्रीमती मदन कौर जी ने किया, जिन्होंने बचपन में ही आपको गोद ले लिया था। माता सविन्दर जी को बाल्यावस्था से ही पूज्य मदन जी और गुरमुख सिंह जी का स्नेह और ममत्व प्राप्त हुआ।

माता सविन्दर जी की प्रारम्भिक शिक्षा फरूर्खाबाद में ही हुई। तत्पश्चात् सन् 1966 में आपने आगे की शिक्षा जीजस एण्ड मेरी कान्वेंट स्कूल, मसूरी से ग्रहण की। सन् 1973 में आपने सीनियर सैकेण्डरी की परीक्षा उत्तीर्ण की। उच्च शिक्षा आपने दिल्ली के दौलतराम कॉलेज से प्राप्त की।

14 नवम्बर 1975 को आपका विवाह निरंकारी बाबा गुरबचन सिंह जी तथा निरंकारी राजमाता कुलवंत कौर जी के सुपुत्र श्री हरदेव सिंह जी के साथ निरंकारी पद्धति से सादा रूप में सम्पन्न हुआ, जो बाद में सद्गुरु के रूप में प्रकट हुए। आपकी तीन सुपुत्रियां हैं– समता जी, रेणुका जी एवं सुदीक्षा जी। तीनों का लालन–पालन आपने अपनी ममता की छाँव में पूर्ण जिम्मेदारी के साथ किया और गृहस्थी के सभी उत्तरदायित्वों को भलीभाँति निभाया।

विवाहोपरान्त वर्ष 1975 एवं 1976 में आप अपने पति श्री हरदेव सिंह जी के साथ, बाबा गुरबचन सिंह जी एवं निरंकारी राजमाता जी द्वारा की गई विश्व कल्याण यात्राओं में सहभागी रहीं। इस यात्रा में कुवैत, इराक, थाईलैण्ड, हांगकांग, कनाडा, यू.एस.ए, ऑस्ट्रिया एवं यू.के. देश सम्मिलित थे।

वर्ष 1980 में युगप्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी के ब्रह्मलीन होने के उपरान्त उस समय के विपरीत एवं चुनौतीपूर्ण वातावरण में आपके पति श्री हरदेव सिंह जी को सन्त निरंकारी मिशन की बागडोर सौंपी गई, तभी से पूज्य माता जी सद्गुरु की छाया बनकर हर समय सद्गुरु के साथ कदम से कदम मिला कर चलती रहीं। सद्गुरु बाबा जी के साथ प्रबन्ध के कार्यों में भी आपने सदैव सहयोग किया। जनरल बॉडी मीटिंग्स में आप हमेशा सम्मिलित रहीं और प्रबन्धकीय सूझबूझ हासिल की। कल्याण यात्राएं हों या पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, पूज्य माता जी ने हर समय सद्गुरु के साथ कदम से कदम मिला कर चलने का प्रयास किया। सदैव शान्त रहकर सबको प्यार और दुलार देना आपके व्यक्तित्व की विशेषता थी।

आपके हृदय में दया और करुणा का भाव सदैव प्रबल रहा। आप सबको सहनशीलता का पाठ पढ़ाती रहीं। खामोश रह कर गुरु भक्ति की प्रेरणा देते रहना, आपका स्वभाव था। इसी स्वभाव के कारण आप सदैव हर गुरसिख–सेवादार का हर प्रकार से ध्यान रखती थीं। पूज्य माता जी के हृदय में बच्चों के प्रति बेहद प्यार और दुलार था। अपना ममत्व लुटाने के लिए यह दिव्य–विभूति हर समय तत्पर रहती थीं तथा संगत के बच्चे–बच्चियों के जीवन को सुन्दर और आदर्श रूप में देखना चाहती थीं।

माता सविन्दर जी हर क्षेत्र में महिलाओं को सक्षम बनाने के लिए प्रयासरत रहीं। समाज कल्याण कार्यों में जहां आपकी रुचि रही वहीं आप सिलाई–कढ़ाई केन्द्रों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रही बहनों के प्रति भी अपनत्व का भाव रखतीं। जेलों में कैदियों के जीवन में सुधार एवं आध्यात्मिक रूप से जागृत करने के लिए आप प्रयासरत रहतीं थीं।

13 मई 2016 को जब युगदृष्टा बाबा हरदेव सिंह जी महाराज नश्वर शरीर त्यागकर निरंकार में विलीन हुए, उस समय सम्पूर्ण निरंकारी जगत, जो भावनात्मक रूप से विचलित एवं अनिश्चय की स्थिति में था, उसे धीरज एवं मार्गदर्शन देने के लिए सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज द्वारा जीवन काल में दिए गए पूर्व संकेतानुसार आपने 17 मई 2016 को सन्त निरंकारी मिशन की बागडोर संभाली।

सद्गुरु रूप में अवतरित माता सविन्दर जी ने अपने पहले सम्बोधन में कहा 'बाबा जी प्रेम के साक्षात् रूप थे। वो सब की गलतियाँ भी प्यार से माफ करके टाल देते थे। कुछ भी हो, सिर्फ प्यार ही प्यार देते थे। बाबा जी यह भी चाहते थे कि हमारा आपसी प्यार बहुत ज्यादा हो। आज हम सब मिल कर यह कसम खायें कि जैसे बाबा जी चाहते थे हम मिल–जुलकर सबके साथ प्यार से आगे बढ़ें और इस मिशन को आगे से आगे पहुंचाएं।' सद्गुरु रूप में अक्टूबर 2016 में अपनी पहली कल्याण यात्रा के दौरान आपने केन्द्र शासित क्षेत्र चण्डीगढ़ तथा करनाल (हरियाणा) के श्रद्धालुओं को दर्शन दिए।

17 मई 2016 से 16 जुलाई 2018 के दरम्यान सद्गुरु रूप में आपने जहाँ भारत के विभिन्न राज्यों– महाराष्ट्र, तेलंगाना, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, सिक्किम आदि राज्यों की कल्याण यात्रा की, वहीं दूर–देशों की कल्याण यात्रा के अन्तर्गत नेपाल, अमेरिका, कनाडा, यू.के. तथा खाड़ी देशों में बसे भक्तजनों को भी अपने दिव्य–दर्शनों से कृतार्थ किया।

सद्गुरु माता जी ने 69वें और 70वें वार्षिक निरंकारी सन्त समागमों की दिव्य रहनुमाई की तथा विश्व भर से आये श्रद्धालु–भक्तों को अपना पावन आशीर्वाद प्रदान किया। महाराष्ट्र के दो समागम मुम्बई में और पूर्वोत्तर राज्यों के दो समागम कोलकाता और सिलीगुड़ी में सद्गुरु माता जी की पावन छत्रछाया में आयोजित किये गये। उत्तर प्रदेश का राज्य स्तरीय समागम भी वाराणसी में सम्पन्न हुआ। सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज द्वारा रचित 'सम्पूर्ण हरदेव बाणी' का लाभ मानव–मात्र को हो सके, आपने उसे प्रकाशित करवाकर 70वें वार्षिक सन्त –समागम के अवसर पर अपने कर–कमलों द्वारा विमोचन कर इसे मानव समाज को अर्पित किया।

14 जनवरी 2018 को हरियाणा में जी.टी. करनाल रोड स्थित सन्त निरंकारी आध्यात्मिक स्थल, समालखा में आयोजित भक्ति पर्व समागम के अवसर पर इस स्थान को समागम स्थल के रूप में विकसित करने के लिए सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज द्वारा बनाये गए प्रारूप को मूर्त रूप देते हुए आपने इस स्थल पर विधिवत निर्माण कार्य का शुभारम्भ किया।

मानव समाज सेवार्थ आप द्वारा किए जा रहे कार्यों को मान्यता प्रदान करते हुए लाईफ काइरोप्रैक्टिक कॉलेज वेस्ट संस्था (अमेरिका) द्वारा सद्गुरु माता जी को 'सर्विस टू ह्यूमेनिटी अवार्ड 2017' द्वारा सम्मानित किया गया। अमेरिका स्थित संस्था वी केयर फॉर ह्यूमेनिटी द्वारा भी वर्ष 2018 का 'सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक विभूति आपको प्रदान किया गया।

वर्ष 2018 में इसी दिन देश के 275 बड़े शहरों में 635 सरकारी अस्पतालों में स्वच्छता अभियान चलाया गया।

विश्व पर्यावरण दिवस पर 5 जून 2017 को फाउंडेशन के तत्वावधान में 8 पर्वतीय स्थलों पर वृक्षारोपण और सफाई अभियान चलाया गया। 2018 में भी देश के 7 राज्यों में 14 पर्वतीय स्थलों पर यह अभियान चलाया गया। इसके अलावा टाइम्स ऑफ इंडिया तथा एन.डी.टी.वी. के वृक्षारोपण व सफाई अभियानों में भी मिशन के श्रद्धालुओं ने उल्लेखनीय योगदान दिया।

सद्गुरु माता जी की प्रेरणा से 2017–18 में 514 रक्तदान शिविर आयोजित किये गये जो कि एक रिकार्ड है।

सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी ने मानव–मात्र को सदैव समर्पित भाव से जीवन जीने की शिक्षा दी और अपने कर्म द्वारा भी समर्पण की इस भावना को साकार स्वरूप प्रदान किया।

शहंशाह बाबा अवतार सिंह जी महाराज द्वारा जीवन काल में ही बाबा गुरबचन सिंह जी को गुरुगद्दी सौंपने की परम्परा को ही आगे बढ़ाते हुए सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी ने परमपूज्य सुदीक्षा जी को सद्गुरु की जिम्मेदारी सौंपते हुए 17 जुलाई 2018 को एक विशाल सत्संग समारोह में पूज्य सुदीक्षा जी के मस्तक पर तिलक लगाकर सद्गुरु के पवित्र आसन पर विराजमान किया।

पूज्य माता सविन्दर जी का स्वास्थ्य कुछ समय से ठीक नहीं चल रहा था। 5 अगस्त, 2018 को आप नश्वर शरीर त्याग कर निरंकार में लीन हो गए। आपका पार्थिव शरीर निरंकारी चौक के समीप ग्राउण्ड नं. 8 में अन्तिम दर्शनार्थ रखा गया जहाँ देश–दूर देश से आए लाखों श्रद्धालु–भक्तों ने आपको नम आँखों से भावपूर्ण श्रद्धाँजलि अर्पित कर अन्तिम विदाई दी।

माता सविन्दर जी पूज्य सुदीक्षा जी को तिलक लगाते हुए

इन आध्यात्मिक कार्यक्रमों के साथ–साथ सद्गुरु माता जी ने मानव सेवा के कार्यों की ओर भी पूरा–पूरा ध्यान दिया। फरवरी 2017 में गुरु पूजा के अवसर पर सन्त निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन के तत्वावधान में देश के 263 बड़े रेलवे स्टेशनों की सफाई की गई।

हालांकि माता सविन्दर जी को निरंकारी सद्गुरु के रूप में लगभग 2 वर्ष से कुछ अधिक समय तक ही विश्व का मार्गदर्शन करने का अवसर मिला लेकिन वास्तविक रूप में सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के 36 वर्ष के कार्यकाल में भी आप पूर्णतः उनके साथ मिशन और मानवता का मार्गदर्शन करती रहीं। आपकी सेवा, भक्ति, समर्पण एवं मार्गदर्शन सदैव–सदैव जहाँ मानव मनों में बसा रहेगा, वहीं आध्यात्मिक मार्ग के राहियों को मंजिल तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध होगा।

श्रीराम प्रजापति

सम्पादकीय

अध्यात्म भी उपकार भी

बाबा अवतार सिंह जी महाराज ने जब यह कहा कि – ''सुख का प्रारंभ घर से करो। आपके घरों में जाएं तो देखने को यही मिले कि सभी सदस्यों में बहुत प्यार है।'' सन्त निरंकारी मिशन का यह ऐसा आधार वाक्य है जिसमें स्पष्ट किया गया है कि इस मिशन में अध्यात्म भी है और उपकार भी। इस प्रकार समाज–कल्याण के बीज शहंशाह जी के समय में ही अंकुरित हो उठे। हम सब यह भी जानते हैं कि सद्गुरु शरीर नहीं होता, सद्गुरु तो ज्ञान है। परन्तु अपनी योजनाएं पूरी करने के लिए यह ज्ञान भी तो किसी शरीर को चुनता है, जिसे सद्गुरु कहा जाता है। शरीर माया का अंग है परन्तु सांसारिक कार्यों के लिए एक साधन अवश्य है।

निरंकारी राजमाता जी के शरीर में होने पर हमें एक ऐसी सुविधा थी जिससे सद्गुरु के विचारों की युक्तियों को समझने में आसानी होती थी। उन्होंने सद्गुरु और गुरसिख के बीच विचारों की व्याख्या के पुल (Bridge) का कार्य किया। जब हम बाबा जी की बात सही ढंग से नहीं समझ पाते थे तब राजमाता जी सद्गुरु के आदेश को हमें ठीक ढंग से समझा देती थीं। उनका हमारे ऊपर यह उपकार ही था। एक समय ऐसा भी आया जब युगपुरुष बाबा अवतार सिंह जी ने साधसंगत को यह बताया कि राजमाता जी जहाँ–जहाँ भी चरण डालेंगी वहाँ–वहाँ खुशियाँ आएगीं। इस प्रकार मिशन में राजमाता जी अध्यात्म के साथ–साथ उपकार का स्रोत भी रहीं।

बाबा गुरबचन सिंह जी महाराज के द्वारा सामाजिक ढांचे में किए परिवर्तन लाखों–लाखों परिवारों को लोक सुखी करने का प्रमुख कारण स्वीकार किया गया। सादा शादियाँ, नशाबन्दी जैसे कार्य इसका प्रमाण हैं। अपने विचारों में उन्होंने स्पष्ट घोषणा की कि ना वे सिक्ख हैं, न हिन्दू। ना मुसलमान हैं और ना ही ईसाई। वे भगवान का एक बंदा मात्र हैं। जिस इंसान के अन्दर मानवता है वही इंसान कहलाने का अधिकारी है।

बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने आध्यात्मिक शिक्षा के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ सामाजिक कल्याण की एक नई सोच देकर संसार पर उपकार किया। सन् 1986 में एक कान्फ्रैंस करके विधिवत रूप में सन्त निरंकारी मण्डल के अन्तर्गत समाज कल्याण विभाग की स्थापना की, जिसका सुखद परिणाम रहा। रक्तदान शिविर, ब्लड बैंक, डिस्पेंसरी, हास्पिटल्स्, स्कूल, कॉलेज जैसे सामाजिक उत्थान के कार्य किये गए।

23 फरवरी 2015 को गुरु–पूजा दिवस के अवसर पर युगदृष्टा बाबा हरदेव सिंह जी महाराज और माता सविन्दर जी द्वारा सन्त निरंकारी हैल्थ सिटी का ग्राउंड ब्रेकिंग समारोह में किया था। समारोह में बाबा हरदेव सिंह जी ने कहा था कि आरंभ से ही मिशन ने न केवल आध्यात्मिक जागृति की दिशा में प्रयास किये हैं बल्कि मानवता के कल्याण के लिए भी हर संभव योगदान दिया है। आपने कहा कि यह संस्था ना केवल रोगियों का इलाज करेगी, बल्कि रोगों को रोकने, नशा मुक्ति तथा अन्य समस्याओं का भी निदान करेगी। माता सविन्दर हरदेव जी महाराज ने भी परियोजना को आशीर्वाद देना जारी रखा और परियोजना के काम की सभी योजनाओं को उनके संरक्षण में अंतिम रूप दिया गया।

सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के पावन आशीर्वाद से 23 फरवरी 2019 को एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया और सन्त निरंकारी हैल्थ सिटी के निर्माण कार्य का शुभारंभ हो गया।

डॉ. विजय शर्मा
e-mail - dr_vijay_sharma@yahoo.co.in
☎ 9868235355

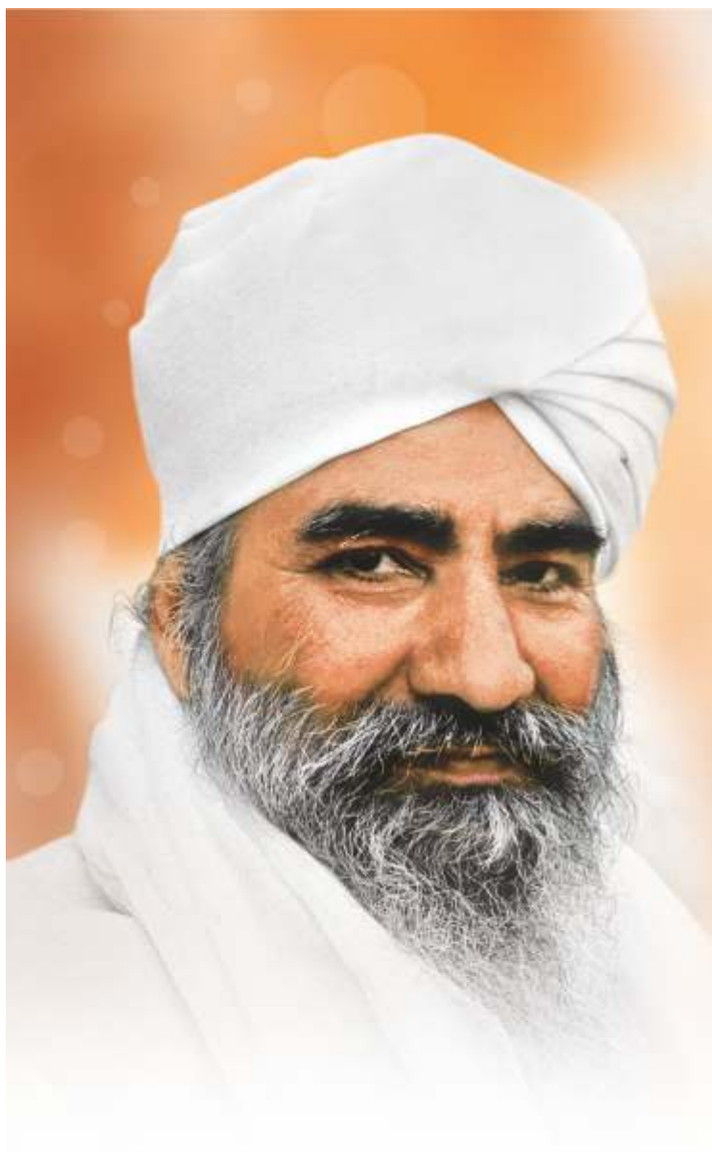

ऐसा था शहंशाह जी का जीवन

✍ एच.एस. 'उपाशक'

जबसे रचनहार ने सृष्टि की रचना की है उसी समय से गुरु के शरीर अनेकों बार बदले हैं लेकिन इतिहास पर नजर डालते हुए पता लगता है कि गुरमत कभी नहीं बदली। इसमें कोई संदेह नहीं कि गुरमत को गुरसिखों तक पहुँचाने के तौर–तरीके बदलते रहे हैं और बदलते रहेंगे। दास सुबह उठकर स्नान करके हर रोज पूजा–पाठ करता था। गुरमत के इतिहास की थोड़ी जानकारी रखता था। खुशकिस्मती यह रही कि बचपन में ही बाबा अवतार सिंह जी के दर्शन हो गए। शहंशाह जी के नूरानी चेहरे से प्रभावित हुए बिना कोई नहीं रह सकता था। दास के साथ भी ऐसा ही हुआ। आप जी के हर एक प्रवचन को धर्मशास्त्रों की कसौटी पर परखता रहा और लगभग चार सालों के बाद ब्रह्मज्ञान की जिज्ञासा जाग्रत हुई।

छोटी आयु से ही सात्विक विचारधारा के लोगों के संपर्क के कारण वर्तमान सद्गुरु के गुरमत के संकेत समझने में कठिनाई नहीं हुई।

सन् 1947 में पाकिस्तान (पंजाब) से उजड़कर, परिवार शरणार्थी रूप में कादियां (पंजाब) में आकर बस गया। सिर से पिता का साया भी दंगों में उठ गया था। परिवार के अन्य सभी सदस्य धार्मिक प्रवृत्ति के तो थे परन्तु मिशन के कट्टर विरोधी थे। ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति उपरांत दिल में यह मांग उठी कि बाबा जी हमारे घर पधारें। भोले भाव में कार्ड दिल्ली लिख दिया। उस समय बाबा जी के टूर–प्रोग्राम बाबू महादेव सिंह जी बनाया करते थे। कुछ ही दिनों बाद मंडल से पत्र के जरिए सद्गुरु के आने की खबर मिल गई। हमारा परिवार एक बड़े घर में इकट्ठा रहता था। दादा–दादी, तीन चाचे परिवार सहित रहते थे। कादियां शहर में ऐसा समागम पहली बार हुआ। दास ने अपने स्कूल के साथियों के साथ मिलकर सुन्दर गेट, झंडियां आदि बनाईं। टांगे पर स्पीकर बांधकर सारे शहर में मुनादी की। सारा शहर उमड़ पड़ा। शहंशाह जी रात को हमारे घर ठहरे और परिवार के बुजुर्ग विरोधी होने के बावजूद भी सेवा में जुटे रहे। ये इंकलाब केवल इसलिए हुआ क्योंकि शहंशाह जी के लिए कोई भी पराया नहीं था।

मेरा काम करें

एक बार शहंशाह जी ने सातों कार्यकारिणी सदस्यों (सात सितारे) के नाम लेकर कहा– ऐसे ही फालतू कागज़ी कारवाई करने से अच्छा है कि किसी महापुरुष को इंग्लैंड, किसी को ईरान, किसी को अमेरिका, किसी को मिडिल ईस्ट भेजो ये जाकर मेरा काम करें, ज्ञान बांटें। बस यही बात कहें कि सद्गुरु दिल्ली में है।

आप जी के इस सपने को सद्गुरु बाबा गुरबचन सिंह जी ने पूरा किया और 1970 में सबसे पहले मंडल यू.के. में इंग्लैंड के कानून मुताबिक रजिस्टर करवाया और फिर अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, ऑस्ट्रिया आदि अनेकों देशों में मिशन की नींव रखी जिसको सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी ने दिन–रात एक करके सींचा। दास को याद है कि सिर्फ छः हफ्ते की जन्मी बच्ची सुदीक्षा जी को साथ लेकर पूरे विश्व का दौरा किया। सद्गुरु माता सविन्दर जी का त्याग भी अपनी मिसाल आप है। दास को अनेकों कल्याण यात्राएं शहंशाह जी, बाबा गुरबचन सिंह जी, राजमाता जी, सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी, सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी के साथ करने का अवसर मिला।

सन् 1967 में बाबा गुरबचन सिंह जी पहली बार यूरोप पधारे। सन्त निरंकारी मिशन की ओर से भारत से बाहर यह पहला रूहानी दौरा था। इस ऐतिहासिक दौरे की समाप्ति पर दास ने और भाई साहब सुखजिंदर सिंह जी ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि अगले साल शहंशाह जी यूरोप में आएं। बाबा जी ने प्रवानगी देकर 1968 की गर्मियों में शहंशाह जी को भेजा। आपजी के साथ सन्त अमर सिंह जी (पटियाला) और बहन भागी जी थे। आज कई नौजवान पढ़ाई–लिखाई की बात करते हैं परन्तु यह सांसारिक कारोबार के लिये होगी क्योंकि सच का सौदा करने के लिए रूहानी तेज चाहिए जोकि तीनों में भरपूर था। शहंशाह जी के स्वागत के लिए बर्मिंघम के हवाई अड्डे पर वहाँ के प्रबन्धकों ने केवल चार सेवादारों को जाने के लिए छूट दी। जब हवाई अड्डे के मैनेजर, जोकि अंग्रेज थे, ने शहंशाह जी के दर्शन किये; उसी समय मिशन के बारे में और जानकारी प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की और ब्रह्मज्ञान प्राप्त करके धन्य हो गया। फिर तकरीबन सात हफ्तों के दौरे के उपरांत शहंशाह जी की रवानगी हुई। उस अंग्रेज ने सारी साध–संगत को जहाज के पास खड़ा कर दिया।

भारत से बाहर संगतों की शुरूआत इंग्लैंड से हुई जो शहंशाह जी ने 1968 में की। लंदन, बर्मिंघम, हुड्र्सफील्ड और लिस्टर जैसे शहरों में बड़े समागम हुए। याद रहे उस समय ज्ञानवान संत उंगलियों पर ही गिने जा सकते थे। हर शहर से उत्साह के साथ शहंशाह जी के दर्शनों के लिए पहुँचे। संत भागमल जी, सतपाल भंडारी जी, ज्ञानी चानन सिंह जी, सुखजिंदर सिंह जी, बख्तावर सिंह 'दलगीर' जी, तरसेम जी, ज्ञान सिंह जी, गुरप्रकाश जी, सुरजीत कमल जी आदि महापुरुषों के स्थानीय समाज में सम्बन्धों ने चार–चाँद लगा दिए। जहाँ–जहाँ शहंशाह जी गये आज उस हर एक स्थान पर सत्संग भवन है। बर्मिंघम में शहंशाह जी कई दिन रहे। उन दिनों में भारतीय मजदूर सभा जिसमें सुखजिंदर सिंह जी कर्ता–धर्ता थे, एक सिनेमा हॉल चलाते थे। 21 दिन हर रोज उस सिनेमा हॉल में सत्संग और ज्ञान की गंगा बहती रही। शहंशाह जी ने आशीर्वाद दिया– ''बर्मिंघम'' लुधियाना और चंडीगढ़ बनेगा। उन्हीं के वरदान रंग लाए और सन् 2012 में अंतर्राष्ट्रीय समागम (NIS) बर्मिंघम में बड़ी कामयाबी के साथ बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने सम्पन्न किया।

गुरसिख गुरु का रूप

दास ने शहंशाह जी से पूछा था– ''बाबा जी आप किस बात पर सबसे ज्यादा खुश होते हो? उनका उत्तर आज भी कानों में गूंज रहा है कि जब मेरे गुरसिख का आदर मेरे जैसा होता है।'' शहंशाह जी की इसी सोच ने बाबू महादेव सिंह जी, प्रधान लाभ सिंह जी, भापा रामचंद जी जैसे अनेकों गुरसिख प्रकट किये। आज यदि शहंशाह जी का समय वापिस करना है तब सोच भी ऐसी पैदा करनी होगी क्योंकि रुहानी मार्ग में आदेश अपने आचरण द्वारा ही दिये जा सकते हैं।

पूज्य अमर सिंह जी जब इंग्लैंड का रूहानी दौरा करके वापिस पटियाला पहुँचे तो उनके स्वागत के लिए एक बड़ा समारोह आयोजित किया। शहंशाह जी ने उस समारोह को चार–चाँद लगाने के लिए हरिमोहन शर्मा जी, संत मंगल सेन जी, शास्त्री जी, मानसिंह जी ड्राईवर समेत कई संतों को पटियाला भेजा।

शहंशाह जी हर एक को निराकार के साथ जुड़ने की बात करते थे। एक बार एक महापुरुष ने पूछा– ''आपका गुरु कौन है?'' उनका सहज में उत्तर था ''आप'' तब आपने फरमाया – मैं कैसे हो सकता हूँ, मेरा शरीर भी पाँच तत्वों का है, आपका भी पाँच तत्वों का है, मेरा भी नाशवान है, आपका भी नाशवान, मैंने आपको निराकार गुरु के साथ जोड़ा है, इसके साथ जुड़ो।

(शेष पृष्ठ 8 पर)

शहंशाह बाबा अवतार सिंह जी महाराज साध-संगत को आशीर्वाद प्रदान करते हुए

वात्सल्य से भरपूर व्यक्तित्व - जगतमाता जी

युगपुरुष बाबा अवतार सिंह जी एवं जगतमाता बुद्धवंती जी ने एक नए इतिहास की रचना की। शहंशाह जी ने 1943 से लेकर 3 दिसम्बर 1962 तक गुरु रूप में जगत का कल्याण किया। इसके बाद 17 सितम्बर 1969 तक पुनः एक गुरसिख बनकर गुरसिखों को गुरमत की बारीकियां समझाईं। जगतमाता बुद्धवंती जी ने भी उनके कदम से कदम मिलाते हुए उनकी शिक्षाओं को कर्म में ढाला। गुरु की धर्मपत्नी होने के बावजूद आप सेवादारों की भी सेवा करती रहीं। सद्गुरु तो बेसहारों का सहारा होता ही है परन्तु जगतमाता जी ने जिस गंभीरता से सेवादारों की व्यक्तिगत समस्याओं एवं जरूरतों की ओर ध्यान दिया और अपनी ममता के विशाल आंचल में उन्हें पनाह दी, वह बेमिसाल है।

आप पेशावर में रहीं या रावलपिण्डी में, आपके घर में हमेशा संतों का आगमन होता रहता था। जहां भक्तजन बाबा बूटा सिंह जी या उनके बाद शहंशाह बाबा अवतार सिंह जी के दर्शन करने एवं आशीर्वाद लेने के लिए आपके निवास स्थान पर पहुँचते, वहीं आपका चुम्बकीय व्यक्तित्व व सेवाभाव भी उनको आपकी ओर खींचता।

भाई साहब राम सरन जी, (सचिव, संत निरंकारी मण्डल) के साथ जुड़ा एक प्रसंग जगतमाता जी के परोपकारी व्यक्तित्व को पूरी तरह स्पष्ट करता है। एक बार राम सरन जी को किसी आवश्यक कार्य के लिए पेशावर से बाहर जाना पड़ा। काम पूरा करके वह शहंशाह जी के दर्शन करने हेतु रावलपिण्डी स्टेशन पर उतर गए। उस समय मूसलाधार वर्षा हो रही थी इसलिए कोई तांगा या अन्य सवारी रेलवे स्टेशन से शहंशाह जी के निवास स्थान मोहनपुरा जाने को तैयार न हुई। तीन घण्टे तक वह स्टेशन पर ही बैठे वर्षा के रुकने का इंतजार करते रहे परन्तु बरसात थमने का नाम नहीं ले रही थी। आखिर वह पैदल ही मोहनपुरा की ओर चल पड़े। घर पहुँचते–पहुँचते रात्रि के दस बज चुके थे। उन्हें इस हालत में देखकर शहंशाह जी एवं जगतमाता जी चकित रह गये। गुरु और गुरसिख का यह एक अलौकिक मिलन था। भीगे हुए कपड़ों में लिपटे राम सरन जी को शहंशाह जी ने सीने से लगाया और अपने इलाही प्रेम से उनकी सारी थकान दूर कर दी। जगतमाता जी ने भी उन्हें बच्चे की भाँति प्यार दिया, उनके हाथ–पैर धुलवाये और उन्हें सूखे कपड़े पहनने को दिये। इसके उपरांत आप उन्हें रसोईघर में ले गईं और इतने प्यार से खाना खिलाया जैसे वह चौबीस साल के जवान न होकर दो साल के बच्चे हों। इस तरह जगतमाता जी की ममता का आंचल हर सेवादार तथा महापुरुष के लिए सदैव खुला रहता।

स्थान बदलते रहे, हालात बदलते रहे परन्तु नहीं बदली तो वह थी जगतमाता जी की सेवा भावना, बल्कि वह दिनों–दिन और भी निखरती गई। निरंकारी कॉलोनी का निर्माण कार्य चल रहा था। अनेक स्थानों से संगतें सेवा के लिए आतीं और जगतमाता जी उनकी सेवा करतीं। आप मिस्तरी महापुरुषों के मैले कपड़े धोतीं, उन्हें पौष्टिक भोजन खिलातीं और रात्रि के समय एक–एक के बिस्तर के पास जाकर गर्म दूध पिलातीं ताकि उनकी दिन भर की थकान दूर हो जाये।

जगतमाता जी हर सेवादार का ध्यान अपने बच्चों की तरह रखतीं। यदि कोई महापुरुष प्रसाद भेंट करता तो आप उसको भी सेवादारों के लिए सम्भाल कर रख लेतीं। शाम को जब सेवादार महापुरुष काम से छुट्टी करके आते तो उन्हें भूख लगी होती। उस समय यह प्रसाद उनमें बाँट देतीं। आपकी छोटी बेटी चरनजीत जी ने बताया कि कभी–कभी ऐसा भी होता था कि हम बच्चे किसी स्वादिष्ट वस्तु को देखकर आप से मांग करते कि यह चीज हमें चाहिए तो आप कहते, 'यह प्रसाद तो मैंने सेवादारों के लिए रखा है। कोई बाजार जायेगा तो आप के लिए और मंगवा दूंगी।'

जगतमाता जी सेवादारों का इतना ध्यान रखतीं कि यदि आप किसी महापुरुष के घर चरण डालने जातीं तो वे अनेक प्रकार के पदार्थ आपके

सामने रखकर बार–बार आग्रह करते कि आप स्वीकार करें तो आप का कहना होता, 'बेटा! मैंने भोग लगा लिया है। यदि आपकी खुशी इस बात में है कि मैं सभी पदार्थ खाऊँ तो आप इनमें से थोड़े–थोड़े एक लिफाफे में डाल दो। मेरे सेवादार बच्चे इन्हें बड़े चाव से खाकर आपको आशीष देंगे। आपका ध्यान भी पूरा हो जाएगा और आपको मेरे साथ–साथ उन सेवादार संतों का आशीर्वाद भी मिल जाएगा।

दया का भाव आपके हृदय में कूट–कूट कर भरा हुआ था। अव्वल तो आपको गुस्सा आता ही नहीं था, अगर आ भी जाता तो वह पानी पर लकीर की भांति होता था। यदि किसी को कभी क्रोधित होकर कुछ कहा भी तो आपका स्वभाव ही ऐसा था कि आप तुरन्त सब कुछ भुला कर फिर उसी भांति बल्कि कई बार उससे भी अधिक उस व्यक्ति से प्रेमयुक्त व्यवहार करने लग जाती थीं।

ऐसी माँ जो सबकी अपनी हो, सबका सहारा हो, वही जगतमाता के खिताब पर पूरी तरह उतर सकती थी। जगतमाता के प्यार का वर्णन सरलता से नहीं हो सकता। उनके नजदीक आकर ऐसे लगता था, जैसे कोई मई–जून की धूप से निकल कर किसी अत्यन्त शीतल छाया में आ गया हो। आपने स्वयं लिखा है :

तन मन धन दी भेटा करके जे गुरु चरनीं आंदी ना।
सच पूछो तां इह बुद्धवंती जग दी माँ अखवांदी ना।
करिश्मा है गुर दी रहमत दा कुल दुनिया दे दाता दा।
बुद्धवंती नू मिलया दरजा आज जगत दी माता दा।

आपके इसी स्वभाव की झलक संत निरंकारी मिशन के परोपकारी संत और पंजाबी भाषा के महान कवि श्री धर्म सिंह 'शौक़' (चण्डीगढ़) की इस अभिव्यक्ति से स्पष्ट होती है –

जगतमाता नूं असी पूजीये जगतपिता दे नाल नाल।
दोहाँ सानूँ वड्डा कीता करके दिन-दिन साल साल।
पुत्र कुपुत्र हो जांदे ने मापे कदे न होन कुमापे।
अपना विरद निभाई जावन किरतघनां नूँ पाल पाल।

(यह लेख जगतमाता जी के जीवन पर आधारित पुस्तक 'जगतमाता बुद्धवंती जी' से लिया गया है)

संकल्प दिवस है - मुक्ति पर्व

'निर्मल' जोशी

भारतीय इतिहास में 15 अगस्त का दिन विशेष महत्व रखता है। यह दिन असंख्य कुर्बानियों की बदौलत प्राप्त हुई स्वंतत्रता को अक्षुण्ण रखने का संकल्प दिवस भी है। निरंकारी जगत में यह ऐतिहासिक दिवस 'मुक्ति पर्व' के नाम से मनाया जाता है। इस दिन युगपुरुष बाबा अवतार सिंह जी महाराज एवं जगतमाता बुद्धवंती जी सहित उन तमाम हजारों महात्माओं को याद किया जाता है जिन्होंने जीवन पर्यन्त सत्य के ज्ञान की दिव्य ज्योति को प्रज्ज्वलित रखा और मानव मात्र को ब्रह्मज्ञान द्वारा मुक्त कराने का अनुकरणीय कार्य किया।

उन हजारों मुक्त आत्मा महापुरुषों को प्रेरणास्रोत मानकर उनके जीवन दर्शन में अपने आपको रूपांतरित करने का प्रयास किया जाता है, जिन्होंने अपना पूरा जीवन इस मिशन के प्रचार–प्रसार में व्यतीत किया। आज सभी सुख–सुविधाओं से सम्पन्न विशाल

मिशन उनकी देन है। उनका तप–त्याग, लगन और विश्वास तो सराहनीय था ही, उनका सादा जीवन, विनम्र व्यवहार, शुद्ध आचरण, निःस्वार्थ जीवन तथा अथक मेहनत भी अद्वितीय थी।

सन्त निरंकारी मण्डल के संस्थापक युगपुरुष बाबा अवतार सिंह जी ने मानव के लौकिक जीवन को सुखी करने के लिए पांच प्रण बनाए और आध्यात्मिक जीवन को आनन्दमय बनाने के लिए निरंकार प्रभु के ज्ञान का प्रसार किया। अनुशासित और मर्यादाशील रहने की प्रेरणा देने के लिए सेवादल की स्थापना की। दिन–रात ब्रह्मज्ञान के प्रचार–प्रसार में लगे रहकर आपने अपने लाखों भक्तों को इस शुभ कार्य में भागीदार बनने की प्रेरणा दी।

इसी शृंखला में सद्गुरुदेव ने शुभ कर्म, निःस्वार्थ सेवा, सादा जीवन और परोपकार की भावना को साकार करने के लिए कई रूपों में अपने आपको प्रकट किया। भले ही भिन्न–भिन्न नाम और रूप नज़र आए परन्तु उन सब महापुरुषों में सद्गुरु प्रेरणा स्रोत के रूप में दिखाई देते रहे। उन सब महापुरुषों के गुण उनके कर्मों द्वारा उजागर होकर जनसाधारण के प्रेरणा स्रोत बने रहे।

यही कारण है कि मुक्ति–पर्व कोई मिशन की रीति या रिवाज नहीं बल्कि सही मायनों में सोचा जाए तो यह संकल्प दिवस है। केवल सत्संग कर लेना, गीत–कविता बोल लेना या कोरा भाषण कर लेना मुक्ति पर्व का मन्तव्य पूरा नहीं करता। मुक्ति पर्व का वास्तविक भाव है, उन महापुरुषों के जीवन की शिक्षा को साकार करना और उनके अनुभवों को आत्मसात् करने के लिए कृत संकल्प होना।

गीत एवं कविता

अवतार शहंशाह

अवतार शहंशाह जी ये उपकार कर गये,
सारे जहाँ में मिशन का प्रचार कर गये।

जब देश का बंटवारा हुआ दिल्ली आ गये,
आके पहाड़गंज में थे डेरे लगाये।
एक–एक से ब्रह्मज्ञानी कई हजार कर गये।

छोटी–सी पाठशाला खोली वहीं भवन में,
विद्या की शुरुआत की बच्चों के जीवन में।
बच्चों को शिक्षा से होनहार कर गये।

निरंकारी कॉलोनी व सरोवर बना गए,
महलों में अपने संतों को वो ही बसा गए।
सपना जो देखा उन्होंने साकार कर गए।

भारत के कोने–कोने में सच की आवाज़ दी,
इस ज्ञान की इंग्लैण्ड में पहुँचाई रोशनी।
कम दुनिया से अज्ञान का अंधकार कर गए।

जीते जी गुरु गद्दी बाबा गुरबचन को दी,
और राजमाँ की ममता हम सब को थी मिली।
संतों हमारी जिन्दगी गुलज़ार कर गए।

'बाबू–विजय' की जोड़ी बनी उनके ही वर से,
वो जोड़ गये राजमाँ गुरबचन के दर से।
भवसागर से शहंशाह जी पार कर गये।

तर्ज : लाए हैं तूफान से ...

❐ बाबू–विजय (दिल्ली)

जो अमर पद पाते हैं

जीते जी मिटकर दुनिया में जो अमर पद पाते हैं।
हम ऐसे भक्तों की याद में मुक्ति पर्व मनाते हैं।
ज्ञान लिया सद्गुरु से और फिर ज्ञानी–सा जीवन भी जिया।
गुरु कृपा से मुक्त हुए खुद औरों को भी मुक्त किया।
रोते हुए तो आते हैं सब हंसते हुए जो जाते हैं।।
हम ऐसे भक्तों की ...
कभी भी गुरु के भक्तों को, ना बांध सका मन का बन्धन।
सच्चे साधक बन भक्तों का, बीता भक्ति में जीवन।
मन के हाथों हारे न जो, जीत के मन को जाते हैं।।
हम ऐसे भक्तों की ...
जैसे सीप में मोती रहता, रहता जैसे जल में कमल।
भक्त भी रहते हैं दुनिया में, दुनिया से न्यारे हर पल।
जग में बसते हैं जग को पर जो मन में न बसाते हैं।
हम ऐसे भक्तों की ...
मान–बड़ाई छल चतुराई से हरदम ही दूर रहे।
सुख–दुःख से उठके 'जगत' में नाम नशे में चूर रहे।
जिनको कुछ न चाहिए पर सब कुछ पाकर जाते हैं।।
हम ऐसे भक्तों की ...

❐ जगत (दिल्ली)

है जरूरत आज

है जरूरत आज जन को परब्रह्म के आधार की।
हर एक में विश्वास कर, हर एक के सत्कार की।।
आह! मानव जाति तेरा, हर अंग जर्जर हो रहा।
क्षय रोग बढ़ता हृदय का, पौरुष पुरातन खो रहा।।
अनियंत्रित वृद्धि जन की, अज्ञानता उद्देश्य से।
गति मंद पड़ती जा रही, भव रोग बढ़ता वेग से।।
निष्प्राण, निष्फल हो रही हर साधना उपचार की।
है जरूरत आज जन को, परब्रह्म के आधार की।।
संग्राम आयुध नित नये, विज्ञान के वरदान हैं।
मतान्तरों के हाय, हर क्षण उठ रहे तूफान हैं।।
शान्त होकर शान्ति सोई, क्रान्ति करवट ले रही।
अवलम्ब अविचल त्याग कर, है डगमगाती यह मही।।
अति वेग बढ़ती जा रही, सम्भावना संहार की।
है जरूरत आज जन को, परब्रह्म के आधार की।।
पर प्रीति उड़ती जा रही, हर मोड़ पर तकरार है।
मानव अमानव बन महा, कर रहा पापाचार है।।
चहुँओर भीषण काल, सर्वत्र जग में व्याप्त है।
भोग–लिप्सा–कष्ट को नित भ्रमित मानव प्राप्त है।।
दूर हो सब दुर्दशाएं, लब लगे मन में प्यार की।
है जरूरत आज जन को, परब्रह्म के आधार की।।
हो सभी को ज्ञान स्व का, आनन्द पूरित हो तभी।
शरण सन्त की मिले जब तो, न कष्ट कोई कभी।।
प्रतिकूल सब अनुकूल हो, भू–लोक स्वर्ग समान हो।
छिट के छटा सत ज्ञान की, संसार ज्योतिर्मान हो।।
दुर्लभ यहाँ कुछ भी कहाँ, यदि हो कृपा निरंकार की।
है जरूरत आज जन को, परब्रह्म के आधार की।।
परमार्थ विष–सा, स्वार्थ अमृतमय लगे जब ज्ञान लो।
निश्चय मनुज का ह्रास भू पर हो रहा है मान लो।।
रक्षार्थ मानव जाति के, सत्संग के आधार से।
जोड़ो जगत को सब परस्पर एक प्रभु के प्यार से।।
निश्चेष्ट देखोगे कहाँ तक दुर्दशा संसार की।
है जरूरत आज जन को, परब्रह्म के आधार की।।

❐ सूर्य नारायण 'सूर्य'

युगदृष्टा बाबा हरदेव सिंह जी का मानवता को अनुपम उपहार :

सन्त निरंकारी हैल्थ सिटी

हैल्थ सिटी का वेलनेस सेन्टर `निरंकारी राजमाता कुलवन्त कौर जी' के नाम से जाना जाएगा

(श्रीराम प्रजापति द्वारा)

सन्त निरंकारी हैल्थ सिटी युगदृष्टा बाबा हरदेव सिंह जी महाराज द्वारा विश्व स्तर पर स्वास्थ्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए व्यापक स्वास्थ्य सेवा होगी। 1400 बिस्तरों वाले इस सुपर स्पेशिएलिटी अस्पताल में विश्व और भारत के बीच एक सर्वोत्तम तालमेल बनेगा, जिससे चिकित्सीय और पुनर्वास संबंधी स्वास्थ्य देखभाल की सुविधा होगी। साथ ही यह विश्व समुदाय के लिए व्यापक कल्याण सुनिश्चित करेगा।

हैल्थ सिटी का प्रस्तावित मॉडल

सन्त निरंकारी मण्डल के महासचिव (से.नि. ब्रिगेडियर) श्री पी. एस. चीमा जी (प्रभारी, मेडीकल, स्वास्थ्य, समाज कल्याण, निरंकारी स्टूडियो एवं कम्प्यूटर व इंटरनेट विभाग) ने हैल्थ सिटी परियोजना की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि – इस परियोजना का उद्देश्य समाज के लिए बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना है। हैल्थ सिटी और अकादमिक चिकित्सा संस्थान स्थापित करने का उद्देश्य उचित स्वास्थ्य सुविधा, स्वास्थ्य शिक्षा, प्रशिक्षण, प्रतिभा विकसित करना, चिकित्सा अनुसंधान और सामुदायिक कल्याण केन्द्र प्रदान करना है।

बाबा हरदेव सिंह जी के पास पारदर्शी स्वास्थ्य देखभाल की दृष्टि थी जो एक संस्थान के रूप में और इसके अनिवार्य कार्यक्रम के लिए भी उत्कृष्टता का केन्द्र स्थापित करेगी।

श्री चीमा जी ने बताया कि प्राथमिक तौर पर उचित और व्यापक स्वास्थ्य सेवा प्रदान करना, रोगी की देखभाल तथा मानवता की सेवा ही परियोजना का मुख्य उद्देश्य है। इस परियोजना को पूर्ण करने का दायित्व मैसर्स आहलूवालिया कॉन्ट्रेक्टस् (इंडिया) लिमिटेड एवं परियोजना के लिए चयनित किये गये मैसर्स एस्ट्रोन हॉस्पिटल एण्ड हेल्थकेयर कंसल्टेंट्स को सौंपा गया है।

उन्होंने बताया कि यह संस्थान डॉक्टर्स, नर्स और सामाजिक कार्यकर्ताओं को शैक्षणिक योगदान देगा। इसके अलावा अनुसंधान, प्रतिभा विकास और सामाजिक सशक्तिकरण के साथ ही लोगों को बीमारी की रोकथाम के बारे में बताने के लिए स्वास्थ्य और कल्याण कार्यक्रमों का आयोजन भी करेगा।

सन्त निरंकारी हैल्थ सिटी न केवल बीमारी से मुक्ति के लिए बल्कि मानव कल्याण, रोग की रोकथाम और स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देने के लिए एक वैश्विक स्थल के रूप में काम करेगा। समाज के कमजोर वर्गों के लिए संस्थान द्वारा सरकारी नियमानुसार विभिन्न सेवाएं प्रदान की जाएंगी। इसके अलावा स्वास्थ्य सेवाओं के लिए कम आर्थिक स्तर की आबादी वाले गांवों को अपनाना, समाज में स्वास्थ्य सेवा की उपलब्धता के लिए साप्ताहिक और नियमित रूप से निःशुल्क स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन, स्वास्थ्य जागरूकता, टीकाकरण, पोषण, स्वच्छता, महिलाओं और बच्चों के सशक्तीकरण से जुड़ी अन्य समस्याओं के निदान के साथ ही सामुदायिक एकजुटता के लिए वेलनेस ब्लॉक स्थापित करना भी प्रस्तावित है। उत्तरी दिल्ली में प्रस्तावित सन्त निरंकारी हैल्थ सिटी राज्य और राष्ट्रीय समुदाय आधारित स्वास्थ्य कार्यक्रमों में भागीदारी के लिए एक महत्वपूर्ण केन्द्र होगा।

हैल्थ सिटी की मुख्य विशेषताओं में 600 आईसीयू बेड सहित 1400 बेड की क्षमता के साथ 50 ऑपरेशन थियेटर्स, अंग प्रत्यारोपण इकाईयां, कैंसर रोगियों के उपचार के लिए चिकित्सा सुविधाएँ, अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ कैथ लैब, डायलिसिस यूनिट, सभी परीक्षणों के लिए पैथोलॉजिकल प्रयोगशालाएं, एमआरआई इकाईयां, सीटी स्कैनर्स, डिजिटल एक्स–रे मशीन, इंटरवेंशनल रेडियोलॉजी मैमोग्राफी यूनिट, अल्ट्रासाउंड, अबोन डेंसिटोमीटर सहित इमेजिंग सेवाएं, पीईटी सीटी और स्पैक्ट सहित न्यूक्लियर मेडिसिन, वेलनेस ब्लॉक, स्टेट ऑफ द आर्ट इंडिपेंडेंट ब्लड बैंक एंड ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन कॉम्प्लैक्स, नर्सिंग और पैरामेडिकल प्रशिक्षण संस्था, पोस्ट ग्रेजुएट शिक्षा और विशेष डॉक्टरों के लिए फैलोशिप की सुविधा और अनुवाद अनुसंधान स्थापित करना भी प्रस्तावित है।

स्पेशलिटी और सुपर स्पेशलिटी सर्विसेज में न्यूरोसाइंस, न्यूरोलॉजी, कार्डियोवस्कुलर साइंसेज, कार्डियोलॉजी, कार्डियक सर्जरी, गैस्ट्रोएंटरोलॉजी, नेफ्रोलॉजी, यूरोलॉजी, ऑन्कोलॉजी मेडिकल, सर्जिकल, जनरल मेडिसिन एण्ड सर्जरी, कॉस्मेटोलॉजी, साइकेट्री, क्लिनिकल फिजियोलॉजी, नेत्र विज्ञान, दंत चिकित्सा, ऑर्थोपेडिक्स, स्पाइन सर्जरी आदि सुविधाएं उपलब्ध कराना प्रस्तावित है। वेलनेस सेंटर में समग्र चिकित्सा स्पा, स्विमिंग पूल, स्वास्थ्य शिक्षा, काइरोप्रैक्टिक उपचार और ब्लड बैंक की सुविधाएं भी होंगी

योगदान के लिए अपीलः

सन्त निरंकारी हैल्थ सिटी परोपकार की एक मेगा परियोजना है जिसका उद्देश्य वैश्विक समुदाय के लिए जाति, रंग–नस्ल, धर्म, सामाजिक–आर्थिक असमानता की परवाह किए बिना स्वास्थ्य और कल्याण मानकों में सुधार करना है।

यह मेगा परियोजना केवल परोपकारी भाईयों–बहनों के उदार योगदान द्वारा पूर्ण की जानी संभव है। आपका यह योगदान इस नेक काम के मकसद को हासिल करने में एक यादगार भागीदारी के रूप में काम करेगा। सन्त निरंकारी मिशन की इस ऐतिहासिक परियोजना को पूर्ण करने के लिए आप सन्त निरंकारी मिशन की वैबसाइटः www.nirankari.org के माध्यम से आर्थिक योगदान प्रदान कर सद्गुरु के आशीर्वाद के पात्र बन सकते हैं।

युगदृष्टा बाबा हरदेव सिंह जी महाराज परियोजना का शुभारंभ करते हुए

सद्गुरु माता सुदीक्षा जी द्वारा निर्माण कार्य का आरम्भ

23 फरवरी 2015 को 'गुरु पूजा दिवस' के अवसर पर युगदृष्टा बाबा हरदेव सिंह जी महाराज और माता सविन्दर हरदेव जी महाराज द्वारा इस परियोजना का शुभारम्भ ग्राउंड–ब्रेकिंग समारोह में किया गया था। समारोह में बाबा हरदेव सिंह जी ने कहा कि आरम्भ से ही मिशन ने ना केवल आध्यात्मिक जाग्रति की दिशा में प्रयास किए हैं बल्कि मानवता के कल्याण के लिए भी हर सम्भव योगदान दिया है। आपने कहा कि यह संस्था ना केवल रोगियों का इलाज करेगी बल्कि रोगों को रोकने, नशा मुक्ति तथा अन्य समस्याओं का भी निदान करेगी। हैल्थ सिटी का वेलनेस सेन्टर 'निरंकारी राजमाता कुलवन्त कौर जी' के नाम से जाना जायेगा। इस अवसर पर बाबा हरदेव सिंह जी ने एक कॉफी टेबल बुक का भी विमोचन किया। माता सविंदर हरदेव जी महाराज ने परियोजना को आशीर्वाद देना जारी रखा और परियोजना के काम की सभी योजनाओं को उनके संरक्षण के माध्यम से अंतिम रूप दिया गया।

सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के पावन आशीर्वाद से, 23 फरवरी 2019 को एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया और सन्त निरंकारी हैल्थ सिटी के निर्माण कार्य का शुभारम्भ किया गया। तत्पश्चात् परियोजना की विधिवत शुरूआत सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के करकमलों द्वारा 14 नवम्बर 2019 को हुई।

परियोजना की विधिवत शुरूआत करते हुए सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज

सन्त निरंकारी हैल्थ सिटी परियोजना का निर्माण कार्य प्रगति पर है

ब्रह्मलीन–सन्त

श्री सतपाल भण्डारी जी

लंदन (यू.के.)। सन्त निरंकारी मण्डल, यू.के. के उप–प्रधान श्री सतपाल भण्डारी जी 2 जुलाई 2020 को निरंकार में लीन हो गये। सद्गुरु के प्रति समर्पित भाव से जीवन जीने वाले भण्डारी जी यू.के. साध संगत के प्रारंभिक सदस्यों में से एक थे। हर परिस्थिति में सहजता अपनाये रखने वाले भण्डारी जी ने सकारात्मक सोच के साथ मिशन के प्रचार–प्रसार में योगदान दिया।

श्री राजेशवर राव जी

हैदराबाद (तेलंगाना)। आन्ध्र प्रदेश एवं तेलंगाना में सन्त निरंकारी मिशन के प्रचार–प्रसार में सक्रिय भूमिका निभाने वाले श्री राजेशवर राव जी 7 मई 2020 को निरंकार में लीन हो गये। आपकी आयु 75 वर्ष थी। आप काफी समय से अस्वस्थ थे। सन् 1972 में ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के बाद आप मिशनरी सेवा में जुट गये। आप प्रारंभिक दौर में 'सन्त निरंकारी' (तेलुगू) के सम्पादन का दायित्व भी निभाते रहे।

श्री कैलाशचन्द्र स्वाईं जी

कटक (ओडिशा)। सन्त निरंकारी मण्डल की कटक जोन के जोनल इंचार्ज श्री कैलाशचन्द्र स्वाईं जी 19 मार्च 2020 को निरंकार में लीन हो गये। आप 'सन्त निरंकारी' (उड़िया) के सम्पादक भी थे। ओडिशा के दूर–दराज के उड़िया भाषी क्षेत्रों में सन्त निरंकारी मिशन के प्रचार–प्रसार में उन्होंने उल्लेखनीय योगदान दिया। आपने सन् 1984 में ब्रह्मज्ञान की दात प्राप्त की। तत्पश्चात् 1987 में सेवादल के सक्रिय सदस्य बने। सन् 1992 में आपको कटक शाखा के मुखी तथा 1998 में प्रमुख की सेवा दी गई। सन् 2017 में ओडिशा की जोन – 44 के जोनल इंचार्ज मनोनीत किये गए।

श्री विष्णुदेव मालाकार जी

बखरी बाजार (बिहार)। सन्त निरंकारी मण्डल की स्थानीय शाखा के मीडिया सहायक एवं एकाउण्टेंट श्री विष्णुदेव मालाकार जी 20 मई 2020 को निरंकार में लीन हो गये। आपकी आयु 65 वर्ष थी। वे सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और शिक्षा क्षेत्र से भी जुड़े रहे।

बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतिश कुमार ने संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि मालाकार जी छात्र जीवन से ही जे.पी. आंदोलन से जुड़े थे। वर्तमान में वे बेगूसराय जदयू जिला कार्यकारिणी सदस्य भी थे।

श्री यशपाल जी

दिल्ली। सन्त निरंकारी मण्डल के केन्द्रीय मुख्यालय में ट्रांसपोर्ट–वर्कशॉप विभाग में सेवारत श्री यशपाल जी 15 जुलाई 2020 को निरंकार में लीन हो गये। आप शहंशाह बाबा अवतार सिंह जी के समय से निरंकारी मिशन से जुड़े थे। आप समर्पित सेवादार महात्मा थे। आपका सद्गुरु के प्रति श्रद्धा और विश्वास सदैव परिपक्व रहा।

श्रीमती सावित्री देवी जी

गन्नौर (हरियाणा)। सन्त निरंकारी मण्डल की गन्नौर शाखा के मुखी श्री राम निवास एवं श्री नरेन्द्र शर्मा 'परवाना' की माता श्रीमती सावित्री देवी जी 23 जुलाई 2020 को 76 वर्ष की आयु में निरंकार में लीन हो गईं। आप श्री रामेश्वर निरंकारी की धर्मपत्नी थीं।

श्री गुरदीप सिंह मेहता जी

दिल्ली। शहंशाह बाबा अवतार सिंह जी के समय से जुड़े समर्पित भक्त श्री गुरदीप सिंह मेहता जी सुपुत्र श्री गुरचरण सिंह जी, निरंकारी कॉलोनी में 4 जुलाई 2020 को निरंकार में लीन हो गये। आप पिछले कुछ समय से अस्वस्थ थे। आप सन्त निरंकारी गर्ल्स सी.सैं. स्कूल की पूर्व प्राचार्य श्रीमती मीना मेहता के पति थे।

रक्तदान अभियान

मुम्बई। विले पार्ले सत्संग भवन में रक्तदान शिविर लगाया गया और इच्छुक रक्तदाताओं को रक्तदान के लिए आमंत्रित किया गया।

दिल्ली में रोहिणी में 17 अप्रैल को शिविर लगाया गया जिसमें 20 यूनिट रक्त संग्रह हुआ। शिविर का उद्घाटन स्थानीय विधायक श्री महिन्दर गोयल ने किया। रमेश नगर सत्संग भवन पर 21 अप्रैल को आयोजित रक्तदान शिविर में 16 यूनिट रक्त संग्रह किया गया। उद्घाटन श्री सुरजीत सिंह 'नशीला' (सेक्टर संयोजक) ने किया।

दिल्ली के रानी बाग सत्संग भवन पर 24 अप्रैल को आयोजित रक्तदान शिविर का उद्घाटन स्थानीय नगर निगम पार्षद सुश्री शशि जेटली ने किया। शिविर में 22 यूनिट रक्त संग्रह किया गया। 28 अप्रैल को करोलबाग सत्संग भवन पर 20 यूनिट रक्त संग्रह हुआ। यहाँ शिविर का उद्घाटन सेक्टर संयोजक श्री सुरजीत सिंह जी ने किया।

दिल्ली के पटेल नगर सत्संग भवन में 11 जुलाई को आयोजित रक्तदान शिविर में रेडक्रॉस सोसायटी ने 29 यूनिट रक्त संग्रह किया। शिविर का उद्घाटन श्री अशोक शर्मा (मुखी, पटेल नगर) एवं श्री राजकुमार आनंद (विधायक) ने किया। पटेल नगर के सेवादल संचालक श्री बब्बू अरोड़ा के नेतृत्व में व्यवस्थाएं की गईं।

दिल्ली के सन्त निरंकारी सत्संग भवन गीता कालोनी में 17 जून को आयोजित रक्तदान शिविर में 33 लोगों ने रक्तदान किया। रेडक्रॉस सोसायटी की टीम ने रक्त संग्रह किया।

उदयपुर (राजस्थान)। स्थानीय सन्त निरंकारी सत्संग भवन में आयोजित रक्तदान शिविर में 20 लोगों ने रक्तदान किया। शिविर का उद्घाटन हिरण नगरी पंचायत के अध्यक्ष श्री मुरलीधर राजानी ने किया।

इस अवसर पर जवाहर नगर पंचायत के पूर्व अध्यक्ष श्री भगवान दास छाबड़िया ने वृक्षारोपण भी किया।

जयपुर (राजस्थान), 19 जुलाई। सन्त निरंकारी मण्डल की हाथोज शाखा द्वारा लगाये गये, रक्तदान शिविर में 25 लोगों ने रक्तदान किया।

जोनल इंचार्ज श्री सुनील बाली एवं संयोजक श्री भूपराम शर्मा के निर्देशन में लगाये गये रक्तदान शिविर में हाथोज, ठीकरिया, दूदू, सांभार एवं रेनवाल के भाई–बहन सम्मिलित हुए। मुख्य अतिथि श्री राम प्रकाश पिपलोदा एवं श्रीमती श्रावणी देवी (सरपंच, ग्राम पंचायत, हाथोज) थे।

पुणे (महाराष्ट्र)। पुणे जोन के अन्तर्गत मई माह में अस्पतालों की मांग पर लगाये गये रक्तदान शिविरों में 568 यूनिट रक्त संग्रह किया गया।

जोनल इंचार्ज श्री ताराचन्द करमचन्दानी ने बताया कि ये शिविर चाकण, हड़सपर, जय जवान नगर, पेरनेफाटा, आव्हावाडी, नानगाव, अण्णापुर एवं सांगवी में आयोजित किए गए। ससून अस्तपाल ब्लड बैंक, आर्मी अस्पताल एवं औंध अस्पताल की टीमों ने रक्त संग्रह किया।

आवश्यक सूचना

देश में लॉकडाउन के कारण निरंकारी पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन और प्रेषण अप्रैल 2020 से नहीं हो पा रहा है। इस कारण सभी पत्र–पत्रिकाएं (हँसती दुनिया, एक नज़र एवं सन्त निरंकारी) तब तक nirankari.org पर E-magazine के रूप में ही प्रेषित की जा रही हैं। स्थिति सामान्य होते ही इन पत्रिकाओं का विधिवत प्रकाशन आरम्भ कर दिया जायेगा। इसलिए पाठकों से निवदेन है कि पत्रिका न पहुँचने के सम्बन्ध में किसी प्रकार की शिकायत व पूछताछ न करें। यह भी सूचित किया जाता है कि जितने माह पत्रिका आप तक नहीं पहुंचेगी उतने माह की सदस्यता राशि (चन्दा) आगे बढ़ा दी जायेगी।

– प्रबन्ध सम्पादक, पत्रिका विभाग

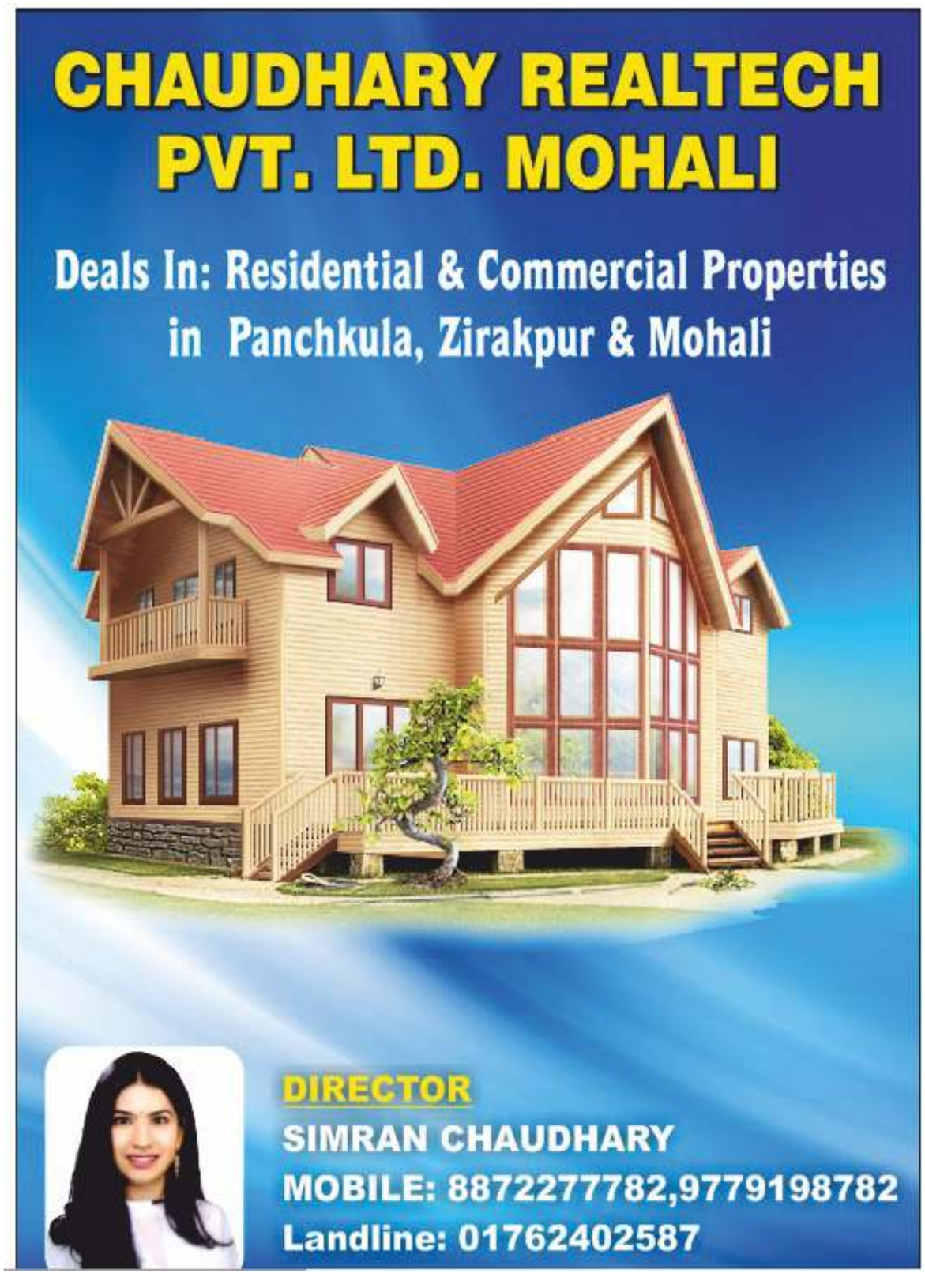

विश्व समाचार

सन्त निरंकारी मिशन मानवता की सेवा में अग्रणी

फोर्ट लॉडरडेल (यूएसए)। कोरोना वायरस महामारी से पूरी दुनिया असहाय अवस्था में है। प्रभावितों को सन्त निरंकारी मिशन भरपूर मदद कर रहा है। भूखे को खाना खिलाने से लेकर मास्क, सैनिटाइजर बांटने और रक्तदान करके मिशन मानवता की सेवा में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

अमेरिका के फ्लोरिडा में फोर्ट लॉडरडेल शाखा द्वारा 29 मई को एक फूड ड्राइव का आयोजन किया गया। स्वच्छ वस्तुओं के साथ–साथ बेघर लोगों के लिए भोजन आदि भी वितरित किया गया। फूड ड्राइव के अलावा कोरल स्प्रिंग्स शहर को 2000 मास्क भी दान किए।

1 जून को क्षेत्रीय सार्वजनिक सुरक्षा संस्थान एवं शहर के अधिकारियों को मास्क वितरित किये गये। कमजोर और वरिष्ठ नागरिकों के लिए रहने की सुविधा प्रदान की गई। दुनिया भर में लोग वित्तीय असफलताओं और मानसिक गिरावट से पीड़ित हैं। सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज से संपूर्ण मानवता को आशीर्वाद देने की प्रार्थना की गई।

पाठकों से निवेदन

हिन्दी, पंजाबी तथा अंग्रेजी भाषा की निरंकारी पत्र-पत्रिकाओंः सन्त निरंकारी, एक नज़र तथा हँसती दुनिया के पाठकों से निवेदन है कि पत्र-पत्रिकाओं के रिकॉर्ड को अपडेट किया जा रहा है। अतः आप अपना मोबाइल नं. और ई-मेल पत्रिका विभाग को ई-मेल : sulekh.sathi@nirankari.org और patrika@nirankari.org तथा WhatsApp Mobile No. 9266629841 पर अतिशीघ्र भेजें ताकि आपका रिकॉर्ड update किया जा सके।

लेखकों के लिए

- ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित होने वाली 'सन्त निरंकारी' विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक पत्रिका है जिसमें अनुभवी लेखकों की रचनाएं प्रकाशित की जाती हैं। अध्यात्म, साहित्य एवं समाज के रचनात्मक समन्वय का प्रयास भी इस पत्रिका द्वारा किया जाता है।
- तीन भाषाओं में प्रकाशित होने वाले पाक्षिक समाचार-पत्र 'एक नज़र' की विषय-वस्तु मुख्यतः दार्शनिक लेख, गहरे पानी पैठ, बाल जगत, ज्ञान-विज्ञान, प्रेरक प्रसंग, प्रेरक विभूति आदि है। इसके स्तर में सुधार तथा इसे और आकर्षक बनाने के निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं।
- चार भाषाओं में छपने वाली बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी बाल मासिक 'हँसती दुनिया' में रोचक कहानियाँ, ज्ञानवर्द्धक वैज्ञानिक लेख, कविताएं समाहित होते हैं।

उपरोक्त पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ सामग्री जैसे लेख, गीत, कहानी, कविताएं आदि केवल ई-मेलः sulekh.sathi@nirankari.org और editorial@nirankari.org पर ही भेजें ताकि आपकी रचनाओं को समयानुसार प्रकाशित किया जा सके।

❑ सुलेख 'साथी', प्रबन्ध सम्पादक, पत्रिका विभाग

ऐसा था शहंशाह जी...

(पृष्ठ 4 का शेष)

गुरसिख कभी दावा नहीं करते

महान सेवक और कवि श्री जगतराम ''उडारू'' जी ने एक बार शहंशाह जी की हुजूरी में कविता पढ़ी– ''हमें डुलायमान करने वाला किसी ने पैदा नहीं किया।'' शहंशाह जी ने तब उनकी तरफ नजर भरकर देखा। दूसरे दिन जब सत्संग में जाने लगे साईकिल सड़क पर खराब हो गयी और पैर की चप्पल भी टूट गई। चंचल मन ने एकदम सोचना शुरू कर दिया कि रोज सत्संग करने का क्या लाभ है? पैर की चप्पल भी टूट गई, साईकिल भी खराब हो गई है। जो सत्संग नहीं करते वे कारों में घूमते–फिरते हैं। यह सोचकर वे रास्ते से ही घर वापिस चले गये। दो–चार दिन सत्संग में नहीं आए। शहंशाह जी ने हालचाल जानने के लिए संदेशा भेजा। तब जाकर चेतना वापिस आई और अगले दिन सत्संग में पहुँच गये, शर्म से पीछे ही बैठ गये। जब नमस्कार करने के लिये आगे आए तो शहंशाह जी ने पूछा कि जगतराम जी क्या हुआ? क्षमा मांगी और आगे से दावा करने से कानों को हाथ लगा लिया।

सद्गुरु का सिखों से प्रेम

वर्ष 1969 में शहंशाह जी ने संगतों की मांग पर बाबा गुरबचन सिंह जी और राजमाता जी को इंग्लैंड भेजा। जबकि उनकी अपनी सेहत भी ठीक नहीं थी। बाबा जी के साथ ऋषि व्यासदेव जी, गुरबख्श सिंह 'राजकवि' जी, हरिमोहन शर्मा जी आदि थे। अभी बाबा जी को गये दो हफ्ते ही हुए थे, दिल्ली से संदेशा वापिस पहुँचने का आया क्योंकि शहंशाह जी की तबीयत और भी बिगड़ गई थी। यू.के. के सेवादारों से बाबा जी ने सारी बात की और यही फैसला किया कि बाबा जी और निरंकारी राजमाता जी तुरन्त दिल्ली पहुँचें क्योंकि बाकी के चार हफ्तों के प्रोग्राम पहले से ही बनाए हुए थे इसलिए सद्गुरु बाबा जी ने इस दौरे को संपूर्ण करने के लिये बाकी की पार्टी को आदेश दिये।

उधर बाबा जी और राजमाता जी दिल्ली शहंशाह जी के पास पहुँच चुके थे परन्तु शहंशाह जी ने पूरे हफ्ते अपने गुरसिखों की इंतजार की और जब राजकवि जी, ऋषि जी तथा बाकी पार्टी वापिस आई उनको मिलकर शरीर त्यागा।

शहंशाह जी की बड़ाई करते सदियां बीत जाएंगी, फिर भी पूरा बखान नहीं किया जा सकता। आपजी का जीवन भक्ति–मार्ग के लिए सदैव मार्गदर्शन करता रहेगा और प्रचारकों, सेवादारों को प्रेरणा देता रहेगा। दास अपना अनुभव लिखना चाहता है कि शहंशाह जी वाला समय किसी और उपग्रह से नहीं आना और न ही किसी सरकार, प्रबंधकों ने लेकर आना है। यह तो हर एक गुरसिख ने अपने जीवन में बदलाव करना है और सोच बदलनी है। ■

15 अगस्त से जुड़ी रोचक बातें

- ❖ भारत के स्वाधीनता आंदोलन का नेतृत्व महात्मा गांधी ने किया था। लेकिन जब देश को 15 अगस्त, 1947 को आजादी मिली, तो वे इसके जश्न में शामिल नहीं हुए थे।
- ❖ महात्मा गांधी उस दिन दिल्ली से हजारों किलोमीटर दूर बंगाल के नोआखली में थे, जहां वे हिंदुओं और मुस्लिमों के बीच हो रही सांप्रदायिक हिंसा को रोकने के लिए अनशन कर रहे थे।
- ❖ जब तय हो गया कि भारत 15 अगस्त को आजाद होगा, तो जवाहर लाल नेहरू और सरदार वल्लभ भाई पटेल ने महात्मा गांधी को एक पत्र भेजा। इस पत्र में लिखा था, '15 अगस्त हमारा पहला स्वाधीनता दिवस होगा। आप राष्ट्रपिता हैं, इसमें शामिल हों अपना आशीर्वाद दें।'
- ❖ गांधीजी ने इस पत्र का जवाब भिजवाया, 'जब कलकत्ता में हिंदु–मुस्लिम एक दूसरे की जान ले रहे हैं, ऐसे में मैं जश्न मनाने के लिए कैसे आ सकता हूं। मैं दंगा रोकने के लिए अपनी जान दे दूंगा।'
- ❖ जवाहर लाल नेहरू ने ऐतिहासिक भाषण 'ट्रिस्ट विद डेस्टनी' 14 अगस्त की मध्यरात्रि को वायसराय लॉज (मौजूदा राष्ट्रपति भवन) से दिया था।
- ❖ तब नेहरू प्रधानमंत्री नहीं बने थे। इस भाषण को पूरी दुनिया ने सुना, लेकिन गांधी उस दिन नौ बजे सोने चले गए थे।
- ❖ 15 अगस्त, 1947 को लॉर्ड माउंटबेटन ने अपने कार्यालय में काम किया। दोपहर में नेहरू ने उन्हें अपने मंत्रिमंडल की सूची सौंपी और बाद में इंडिया गेट के पास प्रिंसेंज गार्डन में एक सभा को संबोधित किया।
- ❖ हर स्वतंत्रता दिवस पर भारतीय प्रधानमंत्री लाल किले से झंडा फहराते हैं, लेकिन 15 अगस्त, 1947 को ऐसा नहीं हुआ था। लोकसभा सचिवालय के एक शोध पत्र के मुताबिक नेहरू ने 16 अगस्त, 1947 को लाल किले से झंडा फहराया था।
- ❖ भारत के तत्कालीन वायसराय लॉर्ड माउंटबेटन के प्रेस सचिव कैंपबेल जॉनसन के अनुसार मित्र देश की सेनाओं के सामने जापान के आत्म समर्पण की दूसरी वर्षगांठ 15 अगस्त को पड़ रही थी, इस कारण इसी दिन भारत को आजाद करने का फैसला किया गया था।
- ❖ 15 अगस्त तक भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा रेखा का निर्धारण नहीं हुआ था। इसका फैसला 17 अगस्त को रेडक्लिफ लाइन की घोषणा से हुआ जोकि भारत और पाकिस्तान की सीमाओं को निर्धारित करती थी।
- ❖ भारत 15 अगस्त को आजाद जरूर हो गया लेकिन उस समय उसका अपना कोई राष्ट्र गान नहीं था। हालांकि रवींद्रनाथ टैगोर 'जन–गण–मन' 1911 में ही लिख चुके थे, लेकिन यह राष्ट्रगान 1950 में ही बन पाया।
- ❖ पंद्रह अगस्त, भारत के अलावा तीन अन्य देशों का भी स्वतंत्रता दिवस है। दक्षिण कोरिया जापान से 15 अगस्त, 1945 को आजाद हुआ। ब्रिटेन से बहरीन को 15 अगस्त, 1971 को आजादी मिली थी और फ्रांस ने कांगो को 15 अगस्त, 1960 को स्वतंत्र घोषित किया था।
- ❖ 15 अगस्त 1519 को पनामा शहर बनाया गया।
- ❖ पंद्रह अगस्त 1772 को ईस्ट इंडिया कंपनी ने विभिन्न जिलों में अलग सिविल और आपराधिक अदालतों के गठन का फैसला लिया था।
- ❖ पंद्रह अगस्त, 1854 को ईस्ट इंडिया रेलवे ने कलकत्ता (वर्तमान में कोलकाता) से हुगली तक पहली यात्री ट्रेन चलाई थी हालांकि आधिकारिक तौर पर इसका संचालन 1855 में शुरू हो सका था।
- ❖ पंद्रह अगस्त 1872 को ब्रिटिश राज से भारत को आजादी दिलाने में शामिल रहने वाले महर्षि अरबिंदो घोष का जन्म हुआ था।
- ❖ पंद्रह अगस्त, 1950 के दिन असम में भीषण भूकंप आया था जिसके कारण यहाँ करीब 1500–3000 लोगों की मौत भूकम्प के कारण हो गई थी।

सभारः वैब दुनिया

वृक्ष बचाओ अभियान

दिल्ली। सन्त निरंकारी चैरिटेबल फाउण्डेशन द्वारा वृक्ष बचाओ अभियान पैन इंडिया की संयुक्त भागीदारी से आयोजित किया गया। 'वन महोत्स' सप्ताह 1 से 7 जुलाई तक आयोजित किया गया जिसमें पेड़ लगाने और बचत करने पर जोर दिया गया। यह अभियान संयुक्त राष्ट्र द्वारा 'विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस साल, जुलाई के पूरे महीने में, एसएनसीएफ स्वयंसेवकों, स्थानीय लोगों और स्थानीय सरकारी एजेंसियों की भागीदारी के साथ, एसएनसीएफ वृक्षारोपण और वृक्ष बचाओ अभियान का संचालन करेगा।

'वन महोत्सव' सप्ताह के दौरान दिल्ली–एनसीआर के विभिन्न स्थानों पर पेड़ लगाने पर जोर दिया गया। एसएनसीएफ के स्वयंसेवकों और स्थानीय लोगों की भागीदारी के साथ इस अभियान के दौरान विभिन्न प्रकार के वृक्षों सहित फलदार पेड़ लगाए गए। स्वयंसेवकों ने न केवल पेड़ लगाने पर जोर दिया, बल्कि उन पेड़ों को बचाने के लिए कई तरह की पहल की, जो पहले लगाए गए थे।

उत्तरी दिल्ली में 4 जुलाई को पेड़ों की सफाई के साथ मौजूदा पेड़ों की रक्षा करके, खरपतवारों की रक्षा करके ड्राइव शुरू किया गया था। टाइम्स ऑफ इंडिया समूह के साथ मिलकर 5 जुलाई को गुरुग्राम में स्थानीय निवासियों के सहयोग से और मौजूदा पेड़ों को लगाने और उनकी सुरक्षा के लिए जागरूकता अभियान चलाया। 6 जुलाई को हरियाणा के गोद लिए गए गाँवों में सरकारी और निजी स्कूलों में अर्थात् पांची गुजरान, भोडवाल माजरी और पट्टी कल्याणा में फलों के पौधे लगाए गए।

कार्यक्रम के दौरान गाँव के सरपंच और अन्य अतिथि उपस्थित थे। हजारों बड़े पेड़ों के लिए रखरखाव अभियान भी शुरू किया गया, जिन्हें एसएनसीएफ द्वारा लगातार रोपण अभियान के दौरान लगाया गया था। आयोजन के दौरान कोविड–19 की महामारी के कारण, कई सावधानियाँ बरती गईं। केवल सीमित संख्या में स्वयंसेवकों को बुलाया गया और सामाजिक दूरी का भी ध्यान रखा गया।

EPIC एवं Colors TV पर
बाबा हरदेव सिंह जी महाराज एवं सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के प्रवचन
EPIC TV पर हर मंगलवार और गुरुवार प्रातः 7 से 7.30 बजे
Colour TV पर हर शनिवार प्रातः 6 से 6.30 बजे

(नोट : प्रकाशित विज्ञापनों की प्रामाणिकता की जाँच पाठक स्वयं सुनिश्चित करें)

प्रकाशक व मुद्रक सी.एल. गुलाटी ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिन्टर्स, बी–220, फेज–2, नोएडा–201305, उ.प्र. से मुद्रित करवा कर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009 से प्रकाशित किया, दूरभाष : 011-47660200 फैक्स : 011-47660300, ई–मेल : editorial@nirankari.org वैबसाइट : www.nirankari.org

प्रबन्ध सम्पादक : सुलेख 'साथी' सम्पादक : डॉ0 विजय शर्मा सह–सम्पादक : श्रीराम प्रजापति अक्षर संयोजन : संजय कुमार